॥ ॐ श्री साई राम ॥

श्री सत्य साई सेवा संगठन ,मध्यप्रदेश

द्वारा बालविकास गुरुओं एवं समूह 1,2 एवं 3 के छात्रों हेतु ई -बुक

“सन्मुख”

सन्मुख होइ जीव मोहि जबहीं जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं । .....गोस्वामी तुलसीदास

<u>मंगलम्</u>

मंगलम् गुरुदेवाय मंगल् विश्वकर्मणे, मंगलम् वैदवेद्याय मंगलम् ज्ञानदायिने मंगलम् प्रेमरूपाय मंगलम् शांतिदायिने, मंगलम् पूज्यपादाय मंगलम् सत्यसाईने

<u>बाल विकास कक्षा क्रम : गुरु को निर्देश।</u>

1. तीन बार ओम का समवेत स्वर में उच्चारण कराकर कक्षा का शुभारंभ करें। इसके उपरांत पांच प्रार्थनाए: ओंकार, गुरु, वक्रतुण्ड, या कुन्देन्दु स्त्रोत के बाद ॐ सहनाववतु कहकर ॐ शांति शांति शांति कहें ।

2.एक माह में दो प्रार्थनाएँ या श्लोक ही सिखाना है। एक सप्ताह सिखाना तथा उसे दूसरे सप्ताह सबसे दोहराने को कहें। शुद्ध उच्चारण बतावें तथा अर्थ बोध भी करावें।

3. प्रत्येक माह में दो नये भजन सिखावें तथा शब्दों का सही उच्चारण व अर्थ भी बतलावें। 4. कक्षा में एक माह में दो कहानियाँ बतलावें।

5. एक शिक्षा प्रद, मूल्य परक खेल सिखायें।

6.सर्वधर्म प्रार्थना कहकर 21 बार ”ओम् श्री साई राम” का जाप करावें।

7. जप के उपरान्त दो मिनिट की मौन बैठक, ध्यान करावें (अंत में प्रार्थनाएं त्वमेव माता, सर्वे वै सुखिनः सन्तु) तथा वैदिक शांति प्रार्थना (असतो मा) कहकर ॐ शांति शांति शांति कहें।

8. सबसे अंत में खड़े होकर आरती करावें। आरती करने वाले के अतिरिक्त सभी अपने स्थान पर बैठे रहें। ॐ शांति शांति शांति के उपरान्त लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु, तीन बार कहकर ॐ शांति शांति शांति के साथ जय जयकार करें तदुपरान्त विभूति प्रसाद, विभूति मंत्र (परम पवित्रम...) कहते हुए वितरित करें।

9. इस प्रकार कक्षा में बच्चों के लिए मूल्योन्मुखी शिक्षा की पांच तकनीक हैं, जिनके आधार पर उन्हें प्रशिक्षित किया जाना चाहिए :-

1. प्रार्थना. 2. भजन 3. कहानी 4. मूल्य परक खेल, सामूहिक क्रियाकलाप 5. ध्यान।

***

गायत्री मंत्र :

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

भावार्थ : हम भगवान सूर्य के मंगलमय दैवी प्रकाश पर ध्यान केन्द्रित करते है । ईश्वर करे यह स्वर्गीय प्रकाश हमारी बुद्धि एवं विचार को आलोकित करे तथा हमारी बुद्धि में प्रवाहित हो ।

साई गायत्री :

ॐ साईश्वराय विद्महे सत्यदेवाय धीमहि, तन्नः सर्वः प्रचोदयात् ।

भावार्थः हम उस सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के स्वामी को जानें। हम सत्य स्वरूप भगवान श्री सत्य साई बाबा का ध्यान करें । वे हम सबको प्रकाशित करें

बाल-विकास कक्षा के प्रारम्भ में तीन बार ओंकार कहने के उपरांत ये पाँच श्लोक कहें

1) ओंकार स्तोत्र -

ऊँकारं बिन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ।
कामदं मोक्षदं चैव, ऊँकाराय नमो नमः ।।।

भावार्थ : चन्द्र बिन्दु सहित ऊँकार से ही हमारी उत्पत्ति हुई है और हम उसी के अंश है । इस सत्य को हृदय में धारण करते हुए योगीजन सदा ऊँकार का ध्यान करते हैं। यह ॐ कार हमारी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला एवं हमें मोक्ष प्रदान करने वाला है । हम उस ऊँकार को नतमस्तक होकर प्रणाम करते हैं ।

2) श्री गुरू स्तुति -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

भावार्थ : गुरू ब्रह्मा के समान हैं क्योंकि वे अपने शिष्यों का चरित्र निर्माण करके उन्हें सच्चरित्र बनाते हैं। गुरू विष्णु के समान हैं क्योंकि वे शिष्यों में सद्गुणों का विकास करते हैं और उनकी रक्षा करते हैं। गुरू भगवान महेश्वर के समान हैं क्योंकि वे शिष्यों की बुरी आदतों और दुर्गुणों का (शिक्षा के द्वारा) नाश करते है। इस प्रकार गुरू ब्रह्मा के समान सृजन या निर्माण का कार्य, विष्णु के समान पालन का कार्य, महेश के समान दुर्गुणों के संहार (नाश) का कार्य करते हैं। अस्तु ऐसे गुरू को मेरा प्रणाम है जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान हैं तथा साक्षात परमब्रह्म हैं।

3) गणपति (गणेश) स्तुति -

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ।।

भावार्थ : श्री गणेश जिनकी सूंड मुडी हुई है, जिनका शरीर विशाल है तथा करोडों सूर्यों के समान प्रकाशमान (तेजस्वी) हैं, ऐसे भगवान गणेश से प्रार्थना है कि वे मेरे सभी अच्छे कार्यों को बिना किसी बाधा के सदा सम्पन्न करें।

4) सरस्वती स्तुति -

या कुन्देन्दुतुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रावृता । या वीणावरदण्ड मण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता । सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ।।

भावार्थ : माँ सरस्वती देवी जो श्वेत कुन्द पुष्प, चन्द्रमा, हिमकणों के हार के समान गौर वर्ण वाली हैं, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण किये हुए हैं, जिनके हाथों में उत्तम वीणा सुशोभित है, जो श्वेत कमल पर विराजी हैं, तथा ब्रह्मा, विष्णु महेश (शंकर) जिनकी सदा वंदना करते हैं- हमारी प्रार्थना है कि वे माँ सरस्वती देवी हमारी रक्षा करें और हमारी बुद्धि में समाये अज्ञान को पूरी तरह नष्ट कर दें।

5) वैदिक प्रार्थना -

ॐ सहनाववतु । सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै ।

तेजस्विनाऽवधीतमस्तु मा विद्विषावहै ।। ओम् शांतिः ओम् शांतिः ओम् शांतिः।

भावार्थ : भगवान हम दोनों (गुरू एवं शिष्य) की रक्षा करें एवं पोषण करें हम दोनों पूर्ण शक्ति के साथ कार्यरत् रहें । हम तेजस्वी विद्या को प्राप्त करें। हम कभी आपस में द्वेष न करें। सर्वत्र शांति हो ।

"युवाओं को आगे बढ़कर पुनर्जागृत भारत का निर्माण तथा विश्व में सुख शांति की स्थापना के लिए कार्य करना है । उन्हें सत्ता के पीछे नहीं भागना है । हर विद्यार्थी के मन में भष्टाचार और अनैतिकता को उखाड़ फेंकने की दृढ़ इच्छा होनी चाहिए । इसके साथ ही उसमें कठोर मेहनत करने की क्षमता हो । भारत माँ का भविष्य युवाओं पर निर्भर करता है और वह उनकी बाट जोह रही है । निःस्वार्थ भाव से मातृभूमि की सेवा करना सभी के जीवन का आदर्श होना चाहिए ।"

.....श्री सत्य साई बाबा

प्रथम समूह एवं द्वितीय के पाठ्यक्रम के अन्य श्लोक

6) श्री शंकर स्तुति -

कैलाश राणा शिव चन्द्र मौली, फणीन्द्र माथा मुकुटी झलाली । कारूण्य सिन्धु भव दुःख हारी, तुझ वीणशंभो मझ कोण तारी ।।

भावार्थ : जिनके माथे पर चन्द्रमा सुशोभित है, जिनके मस्तक पर शेषनाग मुकुट के समान शोभित है, जो दया के सागर हैं, जो समस्त दुःखों का हरण करने वाले हैं कैलाश पर्वत पर विराजे ऐसे हे भगवान शिव आपके बिना मेरा उद्धार कौन कर सकता है ?

7) श्री पार्वती स्तुति -

ॐ सर्व मंगलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ।।

भावार्थ : हे शिवे (शिव की शक्ति) आप सभी प्रकार से सबका कल्याण करने बाली एवं सभी मनोरथों को पूर्ण करने वाली हैं । मैं आपकी शरण में हूँ और आपको प्रणाम करता हूँ।

8) श्री महालक्ष्मी स्तुति -

नमोऽस्तुते महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते । शंखचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तुते ।।

भावार्थ : हे भगवती लक्ष्मी ! आप ही महामाया हैं, आप सभी प्रकार के संशय का नाश करने वाली हैं, आप सभी प्रकार की सम्पदा एवं वैभव प्रदान करने वाली हैं, सभी देवतागण आपकी पूजा करते हैं । आपके हाथों में शंख, चक्र एवं गदा शोभायमान हैं हे महालक्ष्मी मैं आपके कमलरूपी चरणों में नतमस्तक हो प्रणाम करता हूँ ।

9) श्री विष्णु स्तुति -

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ।।

भावार्थ : जो अतिशय शांत स्वरूप है, जो शेषनाग की शय्या पर शयन किये हुए हैं, जिनकी नाभि में कमल है, जो देवताओं के भी ईश्वर हैं, सम्पूर्ण जगत के आधार हैं, जो आकाश के समान सर्वत्र व्याप्त हैं, नील मेघ के समान जिनका वर्ण है, जिनके सभी अंग अति सुन्दर हैं, जिन्हें योगीगण ध्यान के द्वारा प्राप्त करते हैं, जो सम्पूर्ण लोकों के स्वामी हैं, जो संसार के जन्म-मरण रूपी भय का नाश करने वाले हैं, ऐसे लक्ष्मी पति, कमल नेत्र विष्णु भगवान को मेरा प्रणाम हैं ।

10) श्री रामायण स्तुति (कथा) -

पूर्व रामतपोवनादिगमनम् हत्वा मृगम् कांचनम्, वैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीव संभाषणम् ।
बाली निर्दलनम् समुद्र तरणं लंकापुरी दाहनम् । पश्चाद्रावण कुंभकर्ण हननं एतद् हि रामायणम् ।।

भावार्थ : प्रभु राम अपने पिता दशरथ के वचन (महाराज दशरथ ने अपनी रानी कैकई को जो वचन दिया था) के पालन हेतु वन को गये । उनके साथ सीता भी गई थीं । वन में सीताजी स्वर्ण मृग (मायारूपी) से आकर्षित हुई । सीता की इच्छा की पूर्ती के लिए राम उस मृग का शिकार करने गये उसी समय दुष्ट रावण ने सीता जी का हरण किया जटायु ने सीता की रक्षा करने का प्रयास करते हुए अपने प्राण त्याग दिये । सीता की खोज में जाते हुए राम की मित्रता सुग्रीव से हुई और उन्होंने अधर्मी बाली का वध किया । उनकी कृपा से हनुमानजी ने समुद्र पार करके लंका में प्रवेश किया और उसे जलाकर श्री विहीन कर दिया । तत्पश्चात् राम ने राक्षसराज रावण एवं कुम्भकर्ण का वध किया और सीता को प्राप्त किया । यही रामायण की संक्षिप्त कथा है ।

11) हनुमान स्तुति -

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतांवरिष्ठम् वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।

भावार्थ : जिनकी गति मन के समान है और वेग वायु के समान है, जिन्होंने अपनी इंद्रियों पर विजय प्राप्त कर ली है, जो बुद्धिमानों में श्रेष्ठतम हैं, जो पवन के पुत्र हैं और वानरों की सेना के मुखिया हैं और श्री रामचन्द्र के दूत हैं - ऐसे हनुमानजी की मैं शरण लेता हूँ और उन्हें प्रणाम करता हूँ ।

12) श्री दशावतार स्तुति -

वेदानुद्धरते जगन्निवहते भूगोलमुद्विभ्रते । दैत्यं दारयते बलिं छलयते क्षत्रक्षयं कुर्वते ।।

पौलस्त्यं जयते हलं कलयते कारुण्यमातन्वते म्लेच्छान्मूच्छयते दशाकृतिकृते कृष्णाय तुभ्यं नमः ।।

भावार्थ : यह स्तुति भगवान विष्णु की है जिन्होंने अपने भक्तों की प्रार्थना पर जब-जब उन पर (भक्तों पर) अधर्म की विपदा पड़ी तब-तब उनकी रक्षा हेतु विभिन्न रूपों में अवतार लिया । इस श्लोक में उनके दस प्रमुख अवतारों का वर्णन है :-

वेदों में ऐसा वर्णन किया गया है कि भगवान विष्णु ने वेदों का उद्धार करने के लिए मछली (मत्स्यावतार) के रूप में अवतार लिया, डूबती हुई पृथ्वी को बचाने के लिए शक्तिशाली कछुए (कुर्म) के रूप में अवतार लेकर उसका भार अपनी पीठ पर उठाया, विश्व की रक्षा के लिए वाराह अवतार धारण किया, हिरण्यकश्यपु दैत्य का संहार करने के लिए नरसिंह अवतार, बलि को पाताल पहुँचाने के लिए वामन अवतार, क्षत्रियों के अहम् को नष्ट करने के लिए परशुराम अवतार, रावण का वध करने के लिए रामावतार, कंस का वध करने के लिए बलरामावतार, करूणा सिंधु बनकर बुद्ध अवतार और दुष्टों में समाई दुष्टता को दूर करने के लिए कल्कि अवतार लिया हे ! दशावतारी (कृष्णरूपी) भगवान विष्णु में आपकी शरण में हैं - मेरी रक्षा करो । आपको मेरा प्रणाम है ।

"सृष्टि में पाँच तत्व है और मानव में एक छठवाँ तत्व भी है, वह है सर्वोच्च प्रेम । जीवन प्रेम से ही प्रारम्भ होता है । जीवन से निकलने वाली प्रेम की मिठास महान और अद्वितीय होती है जो कि प्रत्येक वस्तु के मूल में है"

- श्री सत्य साई बाबा

प्रार्थनाएँ

13) प्रातःकाल की प्रार्थना -

कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती । करमूले तु गोविन्दः प्रभाते करदर्शनम् ।।

भावार्थ : हाथ (हथेली) के आगे के भाग (अंगुलियों) में लक्ष्मी निवास करती हैं, हथेली के मध्य भाग में देवी सरस्वती का निवास है, हथेली के मूल भाग में भगवान गोविन्द का निवास है । इस प्रकार प्रातः काल अपने हाथों पर दृष्टि डालते हुए मुझे इन तीनों का दर्शन हो रहा है ।

14) पृथ्वी माँ की प्रार्थना

समुद्र वसने देवि पर्वत स्तन मंडले । विष्णु पत्नी नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्वमे ।।

भावार्थ : समुद्र रूपी वस्त्रों को धारण करने वाली पर्वत रूप स्तनों से विभूषित भगवान विष्णु की पत्नी, हे पृथ्वी (धरती माता) देवी ! आप मेरे पैरों के स्पर्श को क्षमा करें ।

15) भोजन पूर्व प्रार्थना -

हरिर्दाता हरिर्भोक्ता हरिरन्नं प्रजापतिः । हरिर्विप्रशरीरस्तु भुक्ते भोजयते हरिः ।।
(ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः)।

भावार्थ : हे प्रभु ! सब प्रकार के भोजनों के दाता आप ही हैं और आप ही उसे ग्रहण करने वाले हैं । हे प्रभु ! आप स्वयं ही अन्न हैं मनुष्य के शरीर में भगवान स्वयं ही भोजन ग्रहण करने वाले तथा भोजन कराने वाले हैं हे प्रभु सब कुछ तेरा ही है और तुझको ही समर्पित है

द्वितीय समूह के लिए भोजन पूर्व की प्रार्थनाएँ

16) **ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम्**

ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ।।4- 24।। गीता

भावार्थ : भोजन रूपी यज्ञ में अर्पण (अर्पण करने का साधन अर्थात् श्रुवा) भी ब्रह्म है और हवन की सामग्री (अर्थात् भोजन) भी ब्रह्म है तथा ब्रह्मरूप अग्नि (जठराग्नि) में आहुति (ग्रास) देने वाला कर्ता भी ब्रह्मरूप है - आहुति देने की क्रिया भी ब्रह्म है। इस प्रकार ब्रह्म कर्म में स्थित पुरुष को प्राप्त होने वाला फल भी ब्रह्म है ।

17) अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः

प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ।। 15 14।।गीता

भावार्थ : मैं (कृष्ण) ही सब प्राणियों के शरीर में रहने वाले प्राण और अपान वायु से संयुक्त वैश्वानर अग्निरूप होकर चार प्रकार के अन्न को पचाता हूँ ।

(श्लोकों को उच्चारित करने के पश्चात् ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः कहें ।)

चार प्रकार के अन्न

1) भक्ष्य - चबाकर खाया जाने वाला जैसे रोटी आदि ।

2) भोज्य - जिसे निगला जाता है जैसे दूध आदि ।

3) लेह्य -जिसे चाटना पडता है, जैसे चटनी मधु आदि

4)चोष्य - जिसे चूसना पडता है, जैसे आम, गन्ना आदि

(बाल-विकास कक्षा में ध्यान के बाद 18, 19, 20 क्रमांक की प्रार्थनाएँ होती है।)

समर्पण प्रार्थनाएँ

18) त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वम् मम देव देव ।।

भावार्थ : हे ईश्वर तुम्हीं मेरी माता हो, तुम्हीं मेरे पिता हो, तुम्हीं मेरे बन्धु हो, तुम्ही मेरे मित्र हो, तुम्ही मेरा ज्ञान (विद्या), तुम्ही मेरा धन (सम्पदा, पराक्रम आदि) हो देवाधिदेव तुम्हीं मेरे सर्वस्व हो ।

19) **सर्वे वै सुखिनः सन्तु, सर्वे सन्तु निरामयाः ।**

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखमाप्नुयात् ।। (ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः)

भावार्थ : सब जन सुखी हों, सब निरोग व स्वस्थ्य हों, सब मंगलमय कार्य देखे, कोई दुःख को प्राप्त न हो ।

20) वैदिक शान्ति प्रार्थना -

असतो मा सदगमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।। मृत्योर्मा अमृतं गमय । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

भावार्थ : हे परमेश्वर ! मुझे असत्य से सत्य के मार्ग पर ले चलो । अज्ञानरूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले चलो । मृत्यु से अमरत्व की ओर ले चलो (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्त करके सत्-चित्-आनन्द की अनुभूति करा, दें) ।

21) शयन पूर्व की प्रार्थना -

करचरणकृतं वाक् कायजं कर्मजं वा । श्रवण नयनजं वा मानसं वाऽपराधम् ।।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व । जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शंभो ।।

भावार्थ : हे दया के सागर शिव शम्भू, आपकी जय हो, मेरे हाथों, पैरों, व वाणी के द्वारा एवं आँखों, कानों व मन के द्वारा जाने व अनजाने बुरे कार्य या अपराध हुए हों उन्हें आप क्षमा कर दें।

दीप ज्योति (सायंकालीन) प्रार्थना

22) शुभं करोति कल्याणं, आरोग्यं धन सम्पदाम् । शत्रुबुद्धि विनाशाय दीपज्योति नमोऽस्तुते ।

भावार्थ : हे दीपक ज्योति हम तुम्हें नमस्कार करते हैं कृपया सबका शुभ करो कल्याण करो सभी आरोग्य रूपी धन सम्पत्ति प्राप्त करें तथा हमारे मन में दूसरों के प्रति उत्पन्न शत्रुता के भावों को नष्ट करें ।

सर्वधर्म प्रार्थना

ॐ तत्सत् श्री नारायण तुं, पुरुषोत्तम गुरु तुं ।

सिद्ध बुद्ध तुं, स्कंद विनायक, सविता पावक तुं । ब्रह्म मज्द तुं, यहव शक्ति तुं, इशु पिता प्रभु तुं । रुद्र विष्णु तुं, रामकृष्ण तुं, रहीम ताओ तुं । वासुदेव गो विश्वरूप तुं, चिदानंद हरि तुं । अद्वितीय तुं, अकाल निर्भय आत्मलिंग शिव तुं । आत्म लिंग शिव तुं, आत्मलिंग शिव तुं, आत्मलिंग शिव तुं ।

भावार्थ : सनातन धर्म में पूजित ओंकार रूपी नारायण और परम पुरुषोत्तम गुरु, जैनियों के सिद्ध, बौद्धों के भगवान बुद्ध, सुब्रमण्यम् (कार्तिकेय), गणेश, सूर्य और अग्नि, पारसियों के प्रभु अहुरमज्द, यहूदियों के यहोवा, ईसाइयों के पिता प्रभु यीशु, हिन्दुओं के शिव शंकर, विष्णु, राम, कृष्ण मुसलमानों के रहीम, चीनियों के प्रभु ताओ, वासुदेव गौ तथा संसार आप ही का रूप है । हे सच्चिदानन्द स्वरूप परमेश्वर आपके समान दूसरा और कोई नहीं है। आप काल से भी परे भय रहित आत्मा लिंग रूपी साक्षात भगवान शिव ही हैं ।

<u>24) ईशावास्यउपनिषद् की शान्ति प्रार्थना -</u>

ॐ ईशावास्यमिदं सर्वम् यत्किंचित् जगत्यां जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्यस्विद्धनम् ।।

भावार्थ : यह सारा जगत हरि ॐ ईश्वर का वास है निवास है । यहाँ जो कुछ भी जीवन है वह उसी से व्याप्त है । अस्तु उसके नाम से त्याग (समर्पण) करते हुए जो कुछ तुम्हें प्राप्त है, उसका भोग त्याग भाव से करो और किसी के भी धन की वासना न रखें ।

25) पूर्ण ब्रह्म की प्रार्थना -

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमवावाशिष्यते ।।

भावार्थ : यह सृष्टि पूर्ण है । वह (ब्रह्म) भी पूर्ण है । उसी ब्रह्म यह सारा दृष्य जगत उद्भूत है उस पूर्ण से इस पूर्ण के अलग हो जाने पर भी वह ब्रह्म पूर्ण ही है ।

26) दीप प्रार्थना -

दीप ज्योतिं पर ब्रह्म दीप ज्योतिं परायणे । दीपेन हरते पापम् सन्ध्या दीप सरस्वती ।।

भावार्थ : दीपक की लौ परमात्मा का प्रतीक है । दीपक की प्रकाश युक्त लौ पर ध्यान लगाने से हमारे पाप नाश होते हैं सन्ध्या समय जो दीपक जलाया जाता है, वह सरस्वती का ही रूप है, सरस्वती ज्ञान की देवी है

अन्य धर्मों की प्रार्थनाएँ

1) बौद्ध धर्म की प्रार्थना -

नमो तस्य भगवतो अरहतो सरमासम्बुद्धस्स ।

अनुवादः- उस भाग्यवान परम पवित्र और पूर्ण ज्ञान से आलोकित बुद्ध भगवान को नमस्कार है

बुद्धं सरणं गच्छामि,

धर्मं सरणं गच्छामि,

संघं सरणं गच्छामि ।

अनुवादः- मैं बुद्ध की शरण में जाता हूँ । मैं धर्म की शरण में जाता हूँ मैं संघ की शरण में

जाता हूँ।

2) पारसी धर्म की वन्दना -

अषेम् वोहु वहिस्तेम् अस्ती, उश्त अस्ती,

उश्ता अहयाई हयत् अषाइ वहिश्ताइ असम

अनुवादः-

1. धर्माचरण (सदाचरण) सर्वोत्तम अच्छाई है। केवल वही सुख है जीवन का प्रकाश (दैदीप्यमान लक्ष्य) है ।

2. वह प्रकाश उसके जीवन में आता है जो धार्मिक है और सर्वोच्च अषा (धर्म) की रक्षा के लिए है ।

3) पवित्र कुरान की प्रार्थनाएँ -

बिस्मिल्ला-हिररहमा-निर्रहीम

अनुवाद: उस अल्लाह (ईश्वर) के नाम पर जो अत्यधिक कृपालु और करूणामय है । (यह प्रार्थना कार्य की सफलता की कुंजी है, और प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने के पूर्व यह प्रार्थना की जाती है ।)

ला इलाह इल्ल अल्लाह, मोहम्मद रसूल अल्लाह

अनुवाद: अल्लाह (एक सत्य) को छोड़कर अन्य कोई शक्ति नहीं है, मोहम्मद अल्लाह के दूत हैं ।

इन्ना-लिल्ला-हे-वा इन्न इल्लाहे रा-जे-ऊन

अनुवाद: प्रत्येक वस्तु ईश्वर के पास से आई है और वहीं लौट जावेगी ।

4) ईसाई धर्म की प्रार्थनाएँ -

Our Father who art in heaven

Hallowed be thy name; Thy kingdom come.

Thy will be done.

On earth, as in heaven

अनुवाद: स्वर्ग में रहने वाले हमारे पिता (ईश्वर) के नाम की जय जयकार हो हे प्रभो आपका साम्राज्य स्वर्ग एवं भूमि पर आये, आपके संकल्प की पूर्ति हो ।

Let us love one another

For love is of God.

And everyone that loveth

is begotten of God.

And knoweth of God.

if God so loves us

We also ought to love one another

God is love

And he that abideth in love

Abideth in God

And God abideth in him.

अनुवाद : हम परस्पर प्रेम करें । क्योंकि यह प्रेम भगवान का ही है । और जो भी प्रेम करता है वह ईश्वर की संतान है, यदि ईश्वर हमें प्यार करता है तो हमें भी एक दूसरे को प्यार करना चाहिए ईश्वर प्रेम ही है अतः जो प्रेम में निवास करता है वह ईश्वर में निवास करता है और ईश्वर उसमें निवास करता है ।

5) जैन धर्म की प्रार्थना-

णमो अरिहंताणं । णमो सिद्धाणं ।

णमो आयरियाणं ।

णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं

अनुवाद : सत पुरूषों को नमस्कार है । सिद्ध पुरूषों को नमस्कार है । आचार्यों को नमस्कार है । उपाध्यायों को नमस्कार है । संसार के समस्त साधुओं को नमस्कार है

श्री सत्य साई बाबा के वचन

क्या तुम जानते हो कि

1) तुम्हें दृष्टि एवं आँखें सहायक के रूप में मिली है ताकि तुम सर्वव्यापी ईश्वर को देख सको ।

2) तुम्हें कान, ईश्वर की महिमा के भजन सुनने के लिए प्राप्त हुए है ।

3) तुम्हें मुँह इसलिए प्राप्त हुआ है कि तुम ईश्वर की महिमा का गुणगान कर सको ।

4) तुम्हें हाथ इसलिए प्राप्त हुए है कि तुम ईश्वर की पूजा कर सको और पुण्य अर्जित कर सको ।

5) तुम्हें पैर इसलिए प्राप्त हुए है कि तुम मंदिर में जाकर भगवान के दर्शन कर सको। 6) तुम्हें बुद्धि इसलिए प्राप्त हुई है कि ताकि तुम अनुभव कर सको कि तुम्हारे चारों ओर फैला संसार क्षणभंगुर तथा अस्थायी है।

7) मनुष्य का हृदय भगवान का मंदिर है इसे सदा साफ रखो।

8) तुम्हें शरीर इसलिए प्राप्त हुआ है कि तुम इस सत्य को प्रकाशित कर सको कि शरीर दूसरों के प्रति अच्छा करने के लिए है।

सुप्रभातम्

ईश्वरांबासुत श्रीमन्, पूर्वा संध्या प्रवर्तते उत्तिष्ठ सत्य साईश कर्तव्यं दैवमान्हिकम् ।।।।।।

भावार्थ : हे ईश्वराम्बा के पुत्र, तेजोमय (तेजयुक्त) ऐश्वर्यपूर्ण महाराज आप जागिये प्रभात होने वाला है उठिये तथा अपने दैवीय कार्यों में प्रवृत्त होइये।

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ पर्तीश, उत्तिष्ठ जगतीपते उत्तिष्ठ करूणापूर्ण, लोक मंगलसिद्धये ।।2।।

भावार्थ : हे पुट्टपर्तीश्वर जगत के स्वामी आप जागिये हे करूणानिधान (दया सागर) आप जागिये एवं संसार का कल्याण कीजिए।

चित्रावतीतट विशाल सुशान्त सौधे, तिष्ठन्ति सेवक जनास्तव दर्शनार्थम्।

आदित्यकान्तिरनुभाति समस्त लोकान्, श्री सत्यसाई भगवन् तव सुप्रभातम् ।।3।।

भावार्थ : चित्रावती नदी के तट (किनारे) स्थित शान्ति से परिपूर्ण, प्रशान्तिनिलयम में आपके भक्त, सेवक आपके मंगलमय दर्शन के लिए उत्सुक बैठे हैं। सूर्य का प्रकाश धीरे धीरे समस्त सृष्टि में फैलता जा रहा है, जिससे समस्त सृष्टि प्रकाशित हो रही है। हे सत्य साई भगवान हमारी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि सुप्रभात की बेला में आप जागिये तथा हमें आशीर्वाद प्रदान कीजिए। आपका यह प्रभात शुभ हो

त्वन्नामकीर्तनरतास्तव दिव्य नाम,

गायन्ति भक्तिरसपान प्रहृष्ट चित्ताः। दातुं कृपासहित दर्शनमाशु तेभ्यः,

श्री सत्यसाई भगवन् तव सुप्रभातम् ।।5।।

भावार्थ : आपके सभी भक्त, जिन्होंने भक्ति रसपान किया है आप का गुणगान कर रहे है

तथा नाम संकीर्तन में लीन है। वे सभी आपके दर्शन की कामना लेकर आपके द्वार पर आये है। अपनी कृपा की वर्षा उन पर कीजिए। जागिए और एक नये प्रकाशवान दिन का आशीर्वाद दीजिए। आपको यह प्रभात शुभ हो।

आदाय दिव्यकुसुमानि मनोहराणि श्रीपादपूजनविधिं भवदंघ्रिमूले।

कर्तुम् महोत्सुकतया प्रविशन्ति भक्ताः श्री सत्यसाई भगवन् तव सुप्रभातम् ।।।।

भावार्थ : आपके भक्त आप के चरण कमलों के विधिपूर्वक पूजन के लिए मनोहारी दिव्य पुष्प लिये अत्यन्त उल्लास व उत्साह-सहित (भवन में) प्रवेश चाहते हैं। उन्हें पाद पूजन का सुअवसर प्रदान कीजिए। हे भगवान श्री सत्यसाई बाबा आपको यह सुप्रभात शुभ हो।

देशान्तरागत बुधास्तव दिव्यमूर्तिम् सन्दर्शनाभिरति संयुत चित्तवृत्या।

वेदोक्तमंत्र पठनेन लसन्त्यजस्रम् श्री सत्यसाई भगवन् तव सुप्रभातम् ।।6।।

भावार्थ : अनेक देशों से पधारे विद्वान लोग आपके दिव्य रूप के दर्शनार्थ, आत्मविभोर हो आपके चित्त को आपकी ओर लगाये हुए वेदमंत्रों का पाठ करते हुए शोभायमान हैं। हे भगवान आपको यह प्रभात शुभ हो।

श्रुत्वा तवाद्भुत चरित्रमखण्ड कीर्तिम् व्याप्ता दिगन्तरविशाल धरातलेऽस्मिन्।

जिज्ञासु लोक उपतिष्ठति चाश्रमेऽस्मिन् श्री सत्यसाई भगवन् तव सुप्रभातम् ।।7।।

भावार्थ : विशालधरा के कोने कोने में आपके चरित्र की अखण्ड कीर्ति पहुँच चुकी है, जिसको सुनकर सत्य की खोज में लगे जिज्ञासु जन इस आश्रम में पधारे हैं और आपके दर्शन की प्रतीक्षा में बैठे हैं। हे भगवान सत्यसाई बाबा आपको यह प्रभात शुभ हो

सीता सतीसम विशुद्ध हृदंबुजाताः

बहुवंगना कर गृहीत सुपुष्पहाराः। स्तुन्वन्ति दिव्यनुतिभिः फणिभूषणं त्वाम् श्री सत्य साई भगवन् तव सुप्रभातम् ।।8।।

भावार्थ : सती सीता समान विशुद्ध हृदय वाली महिलायें आपकी प्रशंसा के गीत गा रही हैं। आप नागभूषण महादेव की दिव्य स्तुति वे महिलायें हाथों में मनोहारी पुष्प मालायें लिए कर रहीं हैं। भगवान महादेव जिन्होंने गले और बाहों पर सरपों को धारण किया है ऐसे हे भगवान सत्यसाई बाबा आपको यह प्रभात शुभ हो।

सुप्रभातमिदं पुण्यं ये पठन्ति दिने दिने। ते विशन्ति परं धाम, ज्ञान विज्ञान शोभिताः ।।9 ।।

भावार्थ : जो भी व्यक्ति इस सुप्रभात को नित्य गावेंगे उन्हें परमधाम की प्राप्ति होगी, तथा वे सर्वोच्च ज्ञान एवं सुबुद्धि प्राप्त करेंगे। वे ज्ञान और विज्ञान से सुषोभित हो परम-धाम में निवास करेंगे।

मंगलं गुरु देवाय, मंगलं ज्ञान दायिने। मंगलं पर्तिवासाय मंगलं सत्यसाईने ।।10।।

भावार्थ : हे दिव्य गुरूदेव आप हम सभी के लिए मंगलकारी हो आप हमको सुज्ञान प्रदान कीजिए हे पुट्टपर्ती (प्रशान्तिनिलियम) वासी भगवान श्री सत्यसाई बाबा आप हम सभी का मंगल करें आप हम सभी का कल्याण करें।

गीता ध्यान श्लोक

ॐ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयं, व्यासेन ग्रथितां पुराण मुनिना मध्ये महाभारतम्।
अद्वैतामृषवर्षिणी भगवतीम् अष्टादशाध्यायिनी- मम्बत्वामनुसंदधामि भगवद्गीते भवद्वेषिणीम् ।।

(ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः) द्वितीय समूह (द्वितीय वर्ष) के लिए गीता श्लोक

कर्म से सम्बन्धित पाँच (5) श्लोक -

1) **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।**
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ।।2-47 ।।

भावार्थ : भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है। कर्मफल की इच्छा मत करना। कर्म का फल पाना तुम्हारा उद्देश्य नहीं होना चाहिए। परन्तु इसका आशय यह नहीं कि तुम निष्क्रिय बन जाओ, कर्म ही न करो।

2) **युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शांतिमाप्नोति नैष्ठिकीम्।**

अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ।।5-12 ।।

भावार्थ : भगवान श्री कृष्ण कहते हैं कि ईश्वर में भक्ति रखने वाला निष्कामी व्यक्ति कर्मफल का त्याग करके भगवान में निष्ठा होने के कारण परमशांति को प्राप्त करता है। किन्तु जो भगवान से नहीं जुडा है, अस्थिर चित्तवाला वह व्यक्ति अपनी इच्छाओं के कारण एवं कर्मफल में आसक्ति रखने के कारण संसार के बंधन में पड़ जाता है।

3) **ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हर्विब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्म समाधिना ।।4-24।**

भावार्थ : (ब्रह्म में लीन रहने वाला जानता है कि सब कुछ ब्रह्म मय है वह जानता है कि)

यज्ञ में आहुति देने वाला ब्रह्म ही है अग्नि जिसमें आहुति दी जाती है, वह ब्रह्म है हकन सामग्री भी ब्रह्म है। हवन करने की क्रिया भी ब्रह्म है इस प्रकार से किया गया यज्ञ ब्रह्मा को ही प्राप्त होता है।

4)**तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्मसमाचर।**
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः ।।3-19।।

भावार्थ : श्री कृष्ण कहते हैं कि तुम आसक्ति से रहित होकर निरंतर कर्त्तव्य कर्म को भलीभांति करो, क्योंकि बिना आसक्ति के कार्य करने वाला अनासक्त व्यक्ति परम उच्च अवस्था को प्राप्त करता है।

5)**यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।**
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ।।9-27।।

भावार्थ : हे कुन्तीपुत्र (अर्जुन) तुम जो कुछ कर्म करते हो, जो कुछ हवन करते हो, जो कुछ दान करते हो जो कुछ स्वधर्माचरण रूप तय करते हो, सब मुझे अर्पण कर दो

भक्ति से सम्बन्धित पाँच (5) श्लोक -

1)**पुरूषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया। यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ।।४-22।।**
भावार्थ : हे पार्थ (अर्जुन) जिस परमात्मा के अन्तर्गत सब प्राणी है और जिस सच्चिदानंद धन परमात्मा से यह सारा जगत परिपूर्ण है वह सनातन परमपुरूष अनन्य भक्ति से प्राप्ति होते हैं।

2) **संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।।2-14।।**

भावार्थ : जो ध्यान योग में युक्त हुआ निरन्तर लाभ हानि में संतुष्ट है तथा मन और इंद्रियों सहित शरीर को वश में किये हुए मेरे में दृढ़ निश्चय वाला है वह मेरे में अर्पण किये हुए मन बुद्धिवाला मेरा भक्त मुझे प्रिय है।

3) **मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरू। मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ।।9-34।**

भावार्थ : श्री कृष्ण अर्जुन को निर्देश देते हैं कि तुम अपने मन को मुझमें स्थिर कर दो। मेरे भक्त बन जाओ- अर्थात् मेरा चिंतन मनन करो। मेरे ही उपासक बनो। समर्पित भाव से मेरी पूजा करो। मुझे प्रणाम करो। इस प्रकार मुझमें एकात्म बोध करते हुए तुम मुझे ही प्राप्त होगे।

4)**सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ।।18-66।।**

भावार्थ : भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं तुम धर्म-अधर्म का विचार त्याग कर एक मात्र मेरी शरण में आ जाओ। मैं तुम्हें सब पापों से मुक्त कर दूंगा चिन्ता मत करो

5)**पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति । तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ।।9-26।।**

भावार्थ : भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि जो भी भक्त मुझे पत्र, पुष्प, फल या जल भक्ति व प्रेम के साथ अर्पण करता है, उसे मैं स्वीकार करता हैं क्योंकि वह भक्तिभाव से शुद्ध हृदय वाले द्वारा अर्पण किया जाता है ।

द्वितीय समूह (तृतीय वर्ष) के लिए गीता-श्लोक

ईश्वर एवं अवतार से सम्बन्धित श्लोक

1)**अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशय स्थितः अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ।।10-20।।**

भावार्थ : हे गुडाकेश (अर्जुन) में सब प्राणियों के हृदय में स्थित सबकी आत्मा में हूँ । मैं ही सबका प्रारंभ हूँ, मध्य हूँ तथा अंत भी मैं ही हूँ ।

2)**पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः । नाना विधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ।।11-5।।**

भावार्थ : अपने विराट विश्व रूप का दर्शन कराते हुए भगवान श्री कृष्ण कहते हैं - हे पार्थ (अर्जुन) मेरे सैकड़ों तथा हजारों अलौकिक दिव्य स्वरूप देखो, जो अनेक रंग वाले है और अनेक प्रकार की आकृति वाले हैं ।

3)**अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः । प्राणापान समायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम् ।।15-14।।**

भावार्थ : मैं वैश्वानर (अमि) के रूप में समस्त प्राणियों के शरीर में रहता हूँ। मैं ही प्राण और अपान वायु से युक्त होकर चारों प्रकार के (भक्ष्य, भोज्य, लेह्य और चोष्य) भोजन को पचाता हूँ।

4)**परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् । धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ।।4-४8।।**

भावार्थ : सज्जनों की रक्षा व उद्धार करने के लिए एवं दुष्ट कर्म करने वाले दुर्जनों के विनाश के लिए तथा धर्म की पुर्नस्थापना के लिए मैं प्रत्येक युग में अवतरित होता रहता हूँ।

5)**यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत । अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।4-7।।**

भावार्थ : भगवान श्री कृष्ण घोषणा करते है कि अर्जुन निश्चय ही जब -जब धर्म की हानि होती है । (सदाचार की अवनति होती है) तथा अधर्म की वृद्धि होने लगती है तब-तब मैं अपना सृजन करता हूँ, अर्थात स्वयं को प्रगट करता हूँ, अवतार लेता हूँ ।

6)**अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।9-22।।**

भावार्थ : इस श्लोक में भगवान श्री कृष्ण ने अत्यन्त महत्वपूर्ण घोषणा की है कि वे कहते हैं कि जो अनन्य भाव से मेरा चिंतन करते हैं, पूरी निष्ठा से मेरी पूजा करते हैं तथा चिंतन के द्वारा नित्य मुझमें ही जुडे रहते है, उनकी सब प्रकार की आवश्यकताओं तथा कुशलमंगल का भार मैं वहन करता हूँ।

तृतीय समूह (प्रथम वर्ष) के लिए गीता - श्लोक

ज्ञान से सम्बन्धित दो (2) श्लोक -

1) न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते । तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ।।4-38।।

भावार्थ : इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह (कुछ भी) नहीं है उस ज्ञान को कितने ही काल से अपने आप समत्वबुद्धि रूप योग के द्वारा शुद्ध पुरूष आत्मा में अनुभव करता है ।

2) श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः । ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ।।4-39 ।।

भावार्थ : जितेन्द्रिय, तत्पर हुआ, श्रद्धावान पुरूष ज्ञान को प्राप्त करता है तथा उसे पाकर तत्क्षण परमशान्ति को प्राप्त कर लेता है।

तृतीय समूह (द्वितीय वर्ष) के लिए गीता-श्लोक

साधना से सम्बन्धित सात (7) श्लोक -

1)**उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत् । आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ।।6-5।**

भावार्थ : अपने द्वारा अपना उद्धार करें और अपनी आत्मा को अधोगति में न पहुँच ने दें क्योंकि यह जीवात्मा आप ही अपना मित्र और आप ही अपना शत्रु है

2) **इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्याभिधीयते । एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ।।13-1।।**

भावार्थ हे अर्जुन यह शरीर क्षेत्र है ऐसा कहा जाता है एवं इसको जो जानता है वह क्षेत्रज्ञ है । ऐसा तत्व को जानने वाले ज्ञानी जन कहते है 1

3) **सत्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः । निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ।।14-51.**

भावार्थ : हे अर्जुन प्रकृति से उत्पन्न हुए सत रज एवं तम गुण (तीनों गुण) अविनाशी जीवात्मा को शरीर में बाँधते हैं.।

4) **अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च । निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ।।12-13।।**

भावार्थ : द्वेष भाव व स्वार्थ रहित सबको प्रेम करने वाला दयालु है तथा ममता एवं अहंकार से रहित सुख दुःख की प्राप्ति में सम और क्षमावान है अर्थात् अपराध करने वाले को भी अभय देने वाला है ।

5)**अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् । स्वाध्यायाभ्यसने चैव वाङ्मयं तप उच्यते ।।17-15।।**

भावार्थ : जो रोष को न करने वाला प्रिय और हितकारी है एवं यथार्थ भाषण है और वेद शास्त्रों को पढ़ने और परमेश्वर के नाम को जपने का अभ्यास है वह निःसंदेह वाणी संबंधी तप कहा जाता है।

6)**त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः । कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ।।16-21।।**

भावार्थ : काम क्रोध तथा लोभ नरक के द्वार अर्थात् आत्मा का नाश करने वाले है अतः इन तीनों को त्याग देना चाहिए ।

7)**श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासात्ज्ञानाद्धयानं विशिष्यते ।**
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ।।12-12।।

भावार्थ : उद्देश्य को न जाने हुए किये गये अभ्यास से परोक्ष ज्ञान श्रेष्ठ है और परोक्ष ज्ञान से मुझ परमेश्वर के रूप का ध्यान श्रेष्ठ है । तथा ध्यान से भी सब कर्मों के फल का मेरे लिए त्याग करना श्रेष्ठ है, और त्याग से तत्काल ही परम शान्ति मिलती है

नोट :- कर्म से संबंधित पाँच (5) श्लोकों के लिए द्वितीय समूह के पाठ्यक्रम के गीता के श्लोक देखें, जो पिछले पृष्ठों पर दिये गये हैं ।

"अष्ट पुष्पम्"

अहिंसा प्रथम, पुष्पम् इंद्रिय निग्रहम, सर्व भूत दया पुष्पम् क्षमा पुष्पम् विशेषतः शान्ति पुष्पम् तपः पुष्पम् ध्यान पुष्पम् तथैव च सत्यं अष्ट विधि पुष्पाणि विष्णोः प्रीतिकरं भवेत् ।

बाल -विकास प्रथम समूह के लिए भजन

प्रथम वर्ष :-

1)जय गुरू ॐकारा जय जय सद्गुरू ॐ कारा ॐ ब्रह्मा विष्णु सदाशिव हर हर हर महादेवा नीलकंठ भोले-भाले डम डम डम डमरू वाले

2) कृष्णं वंदे नंदकुमारम्, राधा वल्लभ नवनीत चोरम् रामम् वंदे दशरथ तनयं, सीतावल्लभ रघुकुल तिलकम्

3) जय राधा राधा राधाकृष्ण राधा राधा कृष्ण राधा, राधा कृष्ण राधा, राधा कृष्ण राधा

4) जय दुर्गा लक्ष्मी सरस्वती साई जगन्माता साई जगन्माता माम् पाहि जगन्माता साई जगन्माता माम् साई जगन्माता

5) गोपाला गोपाला देवकीनंदन गोपाला गोपाला गोपाला वसुदेवनंदन गोपाला।

6)अलख निरंजन भवभय भंजन नारायण नारायण नारायण नारायण नारायण साई नारायण

द्वितीय वर्ष :

7) जय जय राम गोविन्द हरि-हरि
जानकी राम गोविन्द हरि-हरि साई राम गोविन्द हरि-हरि

8)शैल गिरीश्वर उमा महेश्वर, काशी विश्वेश्वर सदाशिवा सदाशिवा सदाशिवा सदाशिवा शंभो सदाशिवा

9) ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमः शिवाय ॐ नमो नारायणाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

10)महागणपते नमोस्तुते, मातंगमुख नमोऽस्तुते हिमाद्रिजा सुत नमोऽस्तुते, ओंकारेश्वर नमोऽस्तुते

11) हे शिवशंकर नमामि शंकर, शिव शंकर शंभो हे गिरिजापति भवानी शंकर शिव शंकर शंभो शिवशंकर शंभो, शिव शंकर शंभो

12) गोविन्द हरे गोपाल हरे हे गोपी गोप बाला
गोविन्द हरे गोपाल हरे हे मुरली गान लोला गोविन्द हरे गोपाल हरे हे राम हृदय लोला गोविन्द हरे गोपाल हरे हे नंद गोप बाला

13) शिव शंभो हर शंभो, भव नाशा कैलाश निवासा पार्वती पते हरे पशुपते, गंगाधरा शिव गौरीपते

14) ॐ श्री राम जय राम जय जय राम सीताराम सीताराम सीताराम राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम

15) गोविन्द कृष्ण विठ्ठले, वेणु गोपाल कृष्ण विठ्ठले रंगा रंग विठ्ठले, श्री पांडुरंग विठ्ठले

बाल-विकास द्वितीय समूह के लिए भजन

प्रथम वर्ष : -

16) श्री गणेश श्री गणेश श्री गणेश पाहिमाम् जय गणेश जय गणेश जय गणेश रक्षमाम् श्री गणेश पाहिमाम जय गणेश रक्षमाम् हर गणेश जय गणेश जय गणेश रक्षमाम्

17) हर शिवशंकर नमामि शंकर, शिव शंकर, शंभो हे गिरिजापति भवानी शंकर शिव शंकर शंभो शिव शंकर शंभो, शिव शंकर शंभो

18) गोविन्द रामा जय जय गोपाल रामा माधवा रामा जय जय केशवा रामा दुर्लभ रामा जय जय सुलभ रामा एक तू रामा जय जय अनेक तू रामा

द्वितीय वर्ष :-

19) जय जय रामा जानकी रामा, रघुकुल भूषण राजा रामा तापसरंजन तारक नामा, दानव भंजन कोदंड रामा

20) गोपाल राधेकृष्ण गोविन्द गोविन्द गोपाल गोपाल गोपाल गोपाल गोविन्द गोविन्द गोपाल राधाकृष्ण गोविन्द गोविन्द गोपाल साई कृष्णा गोविन्द गोविन्द गोपाल

21) जय जय जय मनमोहना, जय जय जय मधुसूदना माधवा केशवा गोपाला गोपालना जय जय विठ्ठल जय हरि विठ्ठल (आठ बार दोहराओ।

22) गंगाधरा हर हर शंभो, विभूति सुन्दर साई शंभो ॐ हर हर हर हर शंभो, हालाहलधर साई शंभो

23) सीताराम नाम भजो मधुर मधुर साई नाम भजो राधेश्याम नाम भजो मधुर मधुर साई नाम भजो

तृतीय वर्ष : -

24)हरि हरि हरि हरि स्मरण करो, हरि चरण कमल ध्यान करो मुरली माधव सेवा करो, मुरहर गिरधारी भजन करो

25)जय जय दुर्गे जय भवानी, शाँभवि शंकरि जय भवानी जय जगदम्बे जय माँगल्ये शाँभवि शंकरि जय भवानी जय जग जननी महाकालिके शांभवी शंकर जय भवानी

26) हे माधवा हे मधुसूदना, दामोदरा हे मुरलीधरा मनमोहना हे यदुनंदना, दीनावना भवभय भंजना

27) गुरू पद रंजन राम जय जय, बंधविमोचन, राजीव लोचन अभय करांबुज राम जय जय, जय जय राम सीताराम

28) अल्ला तुम हो ईश्वर तुम हो, तुम्ही हो राम रहीम साई तुम्ही हो राम रहीम, मेरे राम मेरे राम राम रहीम येशु तुम हो नानक तुम हो, जोहराष्ट्र तुम हो महावीर तुम हो गौतम बुद्ध करीम, तुम्हीं हो राम रहीम मेरे राम...

29)राम हरे साई कृष्ण हरे, सर्व धर्म प्रिय साई हरे अल्ला ईश्वर साई हरे, नानक, येशु बुद्ध हरे जोहराष्ट्र महावीर साई हरे, सर्वधर्म प्रिय साई हरे

बाल-विकास तृतीय समूह के लिए भजन

सर्वधर्म भजन :

30) गुरु नानक जी की जय जय कार, जो बोले सो होवे निहाल अल्लाह साई ले लो सलाम, मौला साई ले लो सलाम सलाम सलाम लाखों सलाम, सलाम सलाम मेरा सलाम
येशु पिता प्रभु साई राम, बुद्ध जोहराष्ट्र महावीर राम

31) मंदिर में तुम राम हो साई, मस्जिद में नूरे मोहम्मद मस्जिद में अल्लाह हो अकबर, गुरुद्वारे में तू गुरू नानक मनमंदिर में साई साई, बोलो राम एक ही राम सब मिल बोलो साई राम

32)राम हरे हरे राम बोलो, हरे राम बोलो, साई राम बोलो राम हरे हरे राम बोलो, साई रामा परम दयाला

मन मंदिर में किया उजाला, राम हरे हरे राम बोलो नानक साई बोलो गोविन्द साई बोलो

अल्लाह साई बोलो मौला साई बोलो

33) सर्वधर्म प्रिय देवा, सत्य साई देवा,

अल्लाह येशु बुद्ध और नानक जोहराष्ट्र महावीर तुम हो राम भी तुम हो कृष्ण भी हो, विश्व रूप तुम हो।

34)साई बाबा तेरा नाम सत्य साई बाबा तेरा नाम तू ही ब्रह्मा, तू ही विष्णु, तू ही नानक, तू ही येशु

तू ही बुद्ध, तू ही जोहराष्ट्रा, तू ही अल्लाह, तू ही महावीर सब है साई भगवान, सब है साई भगवान

साई राम साई राम, साई बाबा तेरा नाम साईबाबा तेरा नाम, साई बाबा तेरा नाम

35)साई बाबा प्रणाम, शिरडी बाबा प्रणाम ओ मेरे आत्मा राम, ले लो मेरा प्रणाम

ईश्वर अल्लाह राम, सबके हे साई राम पूर्ण करो मेरे काम, हे परम शान्तिप्रिय राम

36)नारायण नारायण जय साई राम जय साई राम बोलो जय साई राम

राम रहीम जय साई, बुद्ध महावीर जय साई

बोलो बुद्ध महावीर जय साई राम नारायण नारायण जय साई राम

37)अल्लाह नाम भजो रे भजो, मौला नाम भजो नानक-येशु महावीर नाम भजो

श्री बुद्ध देवा भजो भजो रे भजो श्री सत्य साई भजो भजो रे भजो

श्री रघुनाथ भजो गोविन्द कृष्ण भजो श्री सत्य साई भजो भजो रे भजो

38)राम कृष्ण प्रभु तू जय राम जय राम साई कृष्ण प्रभु तू साई राम साई राम

येशु पिता प्रभु तू हे राम हे राम

अल्ला ईश्वर तू अल्लाह हो अकबर शिरडी साई प्रभु तू साईराम साईराम

अन्य भजन

39) गणेश शरणं शरणं गणेशा - 4 साईशा शरणं शरणं साईशा - 4

40) साई पिता और माता साई, दीन दयाला दाता साई साई गुरू साई सखा सहोदर, साई सत्य शिव साई सुन्दर वेद उपनिषद् गीता साई, दीनदयाला दाता साई

41) जय जय भवानी माँ अम्बे भवानी माँ अम्बे भवानी माँ साई भवानी माँ, जय जय शिर्डी निवासी माँ पर्ती निवासी माँ आत्मा निवासी माँ साई भवानी माँ, जय जय...

42) गोपाला गोपाला राधे नंदलाला, गोविन्द गोपाला राधे नंदलाला वृन्दावन संचार राधे नंदलाला, मुरली मनोहर राधे नंदलाला

43) भजो मन गोविन्द गोपाला

गोविन्द गोपाला, गोपाला भजो मन गोविन्द गोपाला

गोविन्द बोलो हरि गोपाला बोलो, गोविन्द गोपाला गोपाला

44) गोपाला राधा लोला, मुरली लोला नंदलाला, गोपाला. . केशव माधव जनार्दना, केशव माधव जनार्दना, वनमाला वृन्दावना बाला, मुरली लोला नंदलाला

45) गोविन्द जय जय गोपाल जय जय राधा रमण हरि गोविन्द जय जय गोविन्द जय जय गोपाल जय जय राधा रमण हरि गोविन्द जय जय

46) श्री गोपाला गोकुल बाला, तुलसी माला साई गोपाला, श्री गोपाला... राधा बल्लभ रास विलोला, तुलसी माला साई गोपाला

47) नंद लाला नवनीत चोरा, नटवर लाला गोपाला देवकी वसुदेव कुमारा, देव देवा गोपाला वसुदेव देवा गोपाला, नंदलाला मोहन मुरली गान विलोला, मोहना जय गोपाला मन मोहना जय गोपाला, नंदलाला...
48) हरे राम हरे राम, हरे राम कृष्ण हरे राम मुकुन्द माधव श्री साई राम, हरे राम गोविन्द गोपाल राधा के श्याम, गिरधर गोपाल मीरा के श्याम

बोलो राम बोलो श्याम बोलो साई घनश्याम, हरे

49)श्री साईनाथा गुरू गोविन्दा, पर्तीपुरीश्वर जय गोविन्दा प्रशान्तिनिलया राधे गोविन्दा, श्री गुरू जय गुरू विठ्ठल गोविन्दा

50) अम्बा शंकरी परमेश्वरी शशिशेखरी अम्बा सर्वेश्वरी जगदीश्वरी माहेश्वरी अम्बा सुन्दरी गुणमंजरी शिवशंकरी अम्बा बाघांबरी श्वेताम्बरी हरि सीदरी अम्बा

51) सुब्रह्मण्यं सुब्रह्मण्यं, षणमुखनाथा सुब्रह्मण्यं शिव शिव शिव शिव सुब्रमह्मण्यं हर हर हर हर सुब्रह्मण्यं गुरुशरवणभव सुब्रह्मण्यं शिवशरणंभव सुब्रह्मण्यं

शिव शिव हर हर सुब्रह्मण्यं हर हर शिव शिव सुब्रह्मण्यं

आरती

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी सत्य साई हरे

भक्तजना संरक्षक, पर्तीमहेश्वरा ।। ॐ जय.... ।

भावार्थ : हे जगत के स्वामी, हे हरि, हे परमेश्वर, श्री सत्य साई आप भक्तों की पूरी तरह रक्षा करते हैं, इस समय पुट्टापर्ती में साक्षात् देवाधिदेव भगवान शिव महेश्वर ही अवतार

लेकर विराजमान हैं ।

शशि वदना, श्रीकरा, सर्व प्राणपते

स्वामी सर्व प्राणपते, आश्रित कल्पलतिका, आपद्बान्धवा ।। ॐ जय ....

भावार्थ : आपका मनोहारी मुख चंद्रमा के समान शीतल, सुन्दर है, आप सभी जनों के प्राणाधार हैं, सभी की अंतरात्मा में विराजे परमात्मा हैं। वे सभी जन जो आपकी शरण में हैं उनके लिए तो आप साक्षात कल्प वृक्ष की तरह हैं, हे दुःखों और विपत्ति के समय हमारे सच्चे हितैषी आत्मीय भगवान जगत्पति आपकी जय जयकार है।

माता-पिता-गुरू-दैवमु मरि अन्तयुनीवे, स्वामी मरि अन्तयुनीवे, नादब्रह्म जगन्नाथा, नागेन्द्रशयना ।। ॐ जय ... ।।

भावार्थ : हे भगवान आप तो हमारे सनातन शाश्वत माता, पिता, गुरु और परम आराध्य इष्ट देव हैं आप ही हमारे परम प्रिय हैं हमारा अभीष्ट और सर्वस्व हैं, आप ही साक्षात ओंकार अर्थात् प्रणव रूप परब्रह्म हैं, समस्त विश्व के स्वामी आप ही शेषनाग पर शयन करने वाले भगवान विष्णु हैं हे जगदीश्वर आपकी जय जयकार है।

ओंकाररूपा ओजस्वी ओम् साई महादेवा, सत्य साई महादेवा, मंगलआरती अंदुको मन्दर गिरधारी ।। ॐ जय ....।।

भावार्थ : हे परमेश्वर आप ओंकार रूपी परम तेजस्वी महिमा मंडित साईश्वर महादेव हैं। कृपा कर हमारी मंगल आरती स्वीकारें। आप ही मंदराचल पर्वत को धारण करने वाले भगवान विष्णु हैं। आपकी जय जयकार है।

नारायण, नारायण ॐ सत्य नारायण नारायण नारायण ॐ, नारायण, नारायण ॐ सत्य नारायण नारायण ॐ सत्य नारायण नारायण ॐ, ॐ जय सद्गुरूदेवा (तीन बार)

भावार्थ : हे साक्षात नारायण, हे सत्य नारायण, हे श्री नारायण हे भगवान नारायण आप ही हमारे परम गुरू सदगुरू हैं, आपकी जय जयकार है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्ति ।।

विभूति मंत्र

परमं पवित्रं बाबा विभूतिम्, परमं विचित्रं लीला विभूतिम्। परमार्थ इष्टार्थ मोक्षप्रदानम्, बाबा विभूतिम् इदमाश्रयामि।

मानवीय मूल्यों की सूची

मानव जीवन मूल्यों पर आधारित है। मानवीय मूल्य पाँच हैं। सत्य, धर्म (सदाचरण), शान्ति, प्रेम और अहिंसा। यही पाँच सूत्र मानव के भौतिक, बौद्धिक, शारीरिक, भावनात्मक, आत्मिक और आध्यात्मिक विकास पर प्रभाव डालते हैं उचित शिक्षा द्वारा इन्हें पूर्णता प्रदान की जा सकती है। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक में विभिन्न मूल्यों की सूची दी गई है। यथा :

सत्य :- के अन्तर्गत आने वाले उपमूल्य

1. सच्चाई. 2. कौतूहल (जिज्ञासा) 3. ज्ञान की खोज.
4. जाँच पड़ताल की भावना 5. आत्म निरीक्षण
6. धर्म निरपेक्षता. 7. सत्य और असत्य में अंतर का ज्ञान, विवेक.
8. सभी धर्मोके प्रति सम्मान.
9. सर्वव्यापी स्वायंभू सत्य

धर्म (नैतिक आचरण): के अन्तर्गत आने वाले उपमूल्य

1. आज्ञापालन., 2. कर्तव्यनिष्ठा,3. स्वच्छता

4. स्वास्थ्यकर जीवन. 5. नियमबद्धता. 6. समय निष्ठा

7. समय की सदुपयोगिता 8. शारीरिक परिश्रम के प्रति सम्मान

9. परोपकार 10. सादा जीवन 11. दूसरों के प्रति सम्मान

12. आत्म विश्वास. 13. आत्म निर्भरता.

14. अपना कार्य स्वयं करना 15. साधन स म्पन्नता

16. वृद्धों के प्रति सम्मान 17. सामूहिक उत्साह

18. निष्ठावान होना 19. नेतृत्व 20. साहस

21. न्याय 22. समानता 23. सामूहिक कार्य

24. आत्मत्याग 25. आत्मोद्योग

प्रत्येक बच्चे अपने घर में प्रकाश और प्रेम विकीर्ण करने वाली सूर्य किरण है।

श्री सत्य साई बाबा

शान्ति के अन्तर्गत आने वाले उपमूल्य

1. आत्मसंयम 2. षडरिपुओं से छुटकारा 3. अनुशासन

4. पवित्रता 5. संयम 6. ईमानदारी

7. सत्य निष्ठ 8. आत्म सम्मान 9. ध्यान

10. आत्मानुशासन 11. एकाग्रता की शक्ति 12. सहनशीलता

13. शान्ति 14. व्यक्ति के सम्मान के प्रति जागरूकता

15. पाप के विरुद्ध सदाचार के नियमों को विकसित करना

प्रेम के अन्तर्गत आने वाले उपमूल्य :-

1. हृदय की सच्चाई 2. सहानुभूति 3. ????????

4. देशभक्ति 5. निष्ठा 6. सहनशीलता

7. मानवीयता 8. दयालुता

अहिंसा के अन्तर्गत आने वाले उपमूल्य :-

इसके अन्तर्गत दो शाखाएँ हैं, एक तो मनोवैज्ञानिक तथा दूसरी सामाजिक.

मनोवैज्ञानिक उपमूल्य:

1. सहायता की भावना 2. भाई-चारे की भावना 3. विश्वव्यापी प्रेम

4. दयालुता 5. नम्रता 6. सज्जनता 7. सहयोग के लिए तत्परता

8. दूसरों के महत्व को समझना 9. अहिंसा

10. दूसरों के उद्देश्यों को ध्यान रखना 11. शिष्टाचार

12. करूणा 13. दूसरों में सांस्कृतिक मूल्यों का गुण विवेचन

ईश्वर का अनुग्रह एक बीमा है,

जो आवश्यकता के समय तुम्हारी असीम सहायता करेगा।

श्री सत्य साई बाबा

सामाजिक उपमूल्य : -

1. समाज सेवा की भावना 2. राष्ट्रीय एकता के प्रति प्यार

3. समाजवाद 4. मानव जाति की एकता का ज्ञान

5. सामाजिक न्याय का ज्ञान 6. छुआ-छूत से परहेज

7. लोकतांत्रिक निर्णयों के साथ मिलकर चलना

8. राष्ट्रीय अखण्डता के प्रति प्यार

9. नागरिक एवं राष्ट्रीय सम्मति के महत्व को जानना

10. सक्रिय राष्ट्रीय जागरूकता

11. नागरिकता के उत्तरदायित्व के प्रति जागरूकता

12. किसी भी सार्वजनिक कार्य करने के लिए तत्परता

मूल्य गीतों के सम्बन्ध में

विभिन्न मूल्यों को जब गीत-संगीत का माध्यम मिल जाता है तो जो सुम ध्वनि निकलती है वह मानव मन पर अमिट छाप छोडती है, हृदय को अंदर तक छू लेती है । यदि इनको सस्वर प्रातः गाया जावे या सुना जाये तो स्वर लहरी सायंकाल तक साथ रहती है - मानव इसे ही गुनगुनाता रहता है । ये कानों में गूंजते रहते हैं । ये चिरस्थायी होते हैं

श्री सत्य साई बाल - विकास पाठ्यक्रम में मूल्यों पर आधारित इन गीतों को रखने का तात्पर्य यही है कि इनके द्वारा बच्चों को मूल्यों को आत्मसात करने की प्रेरणा मिले।

मूल्य गीत

1) हम होंगे कामयाब-3 एक दिन हो ... मन में है विश्वास, पूरा है विश्वास

हम होंगे कामयाब एक दिन, होगी शान्ति चारों ओर-3 एक दिन

हो ... मन में है ...

हम चलेंगे साथ-साथ डाले हाथों में हाथ

हम चलेंगे साथ-साथ एक दिन हो

नहीं डर किसी का आज, नहीं भय किसी का आज

नहीं डर किसी का आज, एक दिन ...

हो... मन में है विश्वास पूरा है विश्वास

हम होंगे .....

जब आप निन्दा करने किसी की ओर एक उंगली उठाते हो, तो आपकी तीन उंगलियां स्वयं की ओर होती है।

श्री सत्य साई बाबा

2)ऐ मालिक तेरे बन्दे हम

ऐ मालिक तेरे बन्दे हम, ऐसे हों हमारे करम

नेकी पर चलें और बदी से डरें

ताकि हंसते हुए निकले दम, ऐ मालिक .. ..

ये अंधेरा घना छा रहा, तेरा इंसान घबरा रहा,

हो रहा बेखबर कुछ न आता नज़र

सुख का सूरज छिपा जा रहा

है तेरी रोशनी में जो दम

तू अमावस को कर दे पूनम

नेकी पर चलें और बदी से डरें

ताकि हंसते हुए निकले दम, ऐ मालिक ...

जब जुल्मों का हो सामना, तब तू ही हमें थामना

वो बुराई करें हम भलाई करें, नहीं बदले की हो भावना

बढ़ उठे प्यार का हर कदम और मिटे बैर का ये भरम

नेकी पर चलें और बदी से डरें

ताकि हंसते हुए निकले दम, ऐ मालिक

बडा कमज़ोर है आदमी, अभी लाखों है इसमें कमी

पर तू जो खड़ा है दयालु बड़ा

तेरी कृपा से धरती थमी

दिया तूने हमें जब जनम तू ही झेलेगा,

हम सब के गम नेकी पर चलें और बदी से डरें

ताकि हंसते हुए निकले दम, ऐ मालिक .....

वाणी में संयम रखो । उससे प्रेम उत्पन्न होता है। जब पैर फिसलता है तो चोट ठीक हो सकती है । परन्तु जब जीभ फिसलती है तो उससे उत्पन्न दूसरों के हृदय का घाव जीवन भर हरा रहता है । जिन्हा चार प्रमुख दोषों का कारण बनती है - असत्य भाषण, दूसरों की निंदा, दूसरों के दोष निकालना और अधिक बोलना । यदि व्यक्ति और समाज में शान्ति लानी है तो इनसे दूर रहना चाहिए । किसी के प्रति जहरीले शब्द न कहो क्योंकि वे शब्द तीर से भी अधिक चुभन देते हैं।

श्री सत्य साई बाबा

3) हमको मन की शक्ति देना, मन विजय करे

दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें । हमको.....

भेदभाव अपने दिल से, साफ कर सकें ।

झूठ से बचे रहें, सच का दम भरें । दूसरों.....

मुश्किलें पड़ें तो हम पे, इतना करम कर,

साथ दें तो धर्म का, चलें तो धर्म पर ।

खुद पे हौसला रखें, किसी से न डरे

दूसरों की जय से पहले, खुद को जय करें। हमको.....

4) तुम्ही हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्ही हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो ।

तुम्हीं हो साथी तुम्ही सहारे, कोई न अपना सिवा तुम्हारे ।

तुम्हीं हो नैया, तुम्हीं खिवैया, तुम्हीं हो बन्धु सखा तुम्ही हो ।

तुम्ही हो माता.....

जो खिल रहें हैं वे फूल हम हैं, तुम्हारे चरणों की धूल हम हैं।

दया की दृष्टि सदा ही रखना, तुम्ही हो बन्धु, सखा तुम्हीं हो।

तुम्ही हो माता .....

5) हिन्द देश के निवासी सभीजन एक हैं
रंग,रूप, वेष भाषा चाहे अनेक हैं।
बेला, गुलाब, जूही, चम्पा, चमेली
प्यारे प्यारे फूल गुंथे माला में एक हैं। हिन्द देश....

कोयल की कूक न्यारी, पपीहे की टेर प्यारी
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।
गंगा, जमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी
जा के मिल गई सागर में हुई सब एक है। हिन्द देश.....

6) ज्योति से ज्योति जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।
राह में आये जो दीन-दुखी, सबको गले से लगाते हुए चलो।।
प्रेम की गंगा बहाते चलो -2
जिसका कोई न संगी साथी, ईश्वर है रखवाला ।

जो निर्धन है जो निर्बल है, वो है प्रभु को प्यारा ।।
प्यार के मोती-2 लुटाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो -2
आशा टूटी ममता रूठी, छूट गया है किनारा,
बंद करो मत द्वार दया का, दे दो कुछ तो सहारा ।।

दीप दया का -2 जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो ।।। 2
ज्योति से ज्योति जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो।

7). जग में हम कुछ काम करेंगे, कभी नहीं आराम करेंगे
काम करेंगे काम करेंगे काम करेंगे काम करेंगे

रुकने वाला पहिया अडता, रुकने वाला पानी सड़ता
रुकने वाली घडी न चलती, रुकने वाली कलम न लिखती

(काम करेंगे काम करेंगे काम करेंगे)

रुकने वाली फौजें हारी

रुकते कदम हुए हैं भारी, हम रुकने की रीति न सीखें
हम झुकने की रीति न सीखें, काम....

काम सुबह और शाम करेंगे, कभी नहीं आराम करेंगे
काम करेंगे...

8) अज्ञान के अंधेरों से हमें ज्ञान के उजालों की ओर ले चलो.
असत्य की दिवारों से हमें सत्य के शिवालों की ओर ले चलो,

अज्ञान.....

सारे जहाँ के सब दुखों का एक ही तो निदान है,
या तो वो अज्ञान अपना या तो वो अभिमान है,

नफरतों के जहर से आ.आ.आ...प्यार के
प्यालों की ओर ले चलो.... ।।
अज्ञान.....

हम ये मर्यादा न तोड़े, अपनी सीमा में रहें
न करें अन्याय, ना अन्याय औरों का सहें
कायरों से दूर हों, वीर हृदय वालों की
ओर ले चलो ऽऽऽ..... ।।

अज्ञान.....

9)प्रेम ईश्वर है... ईश्वर प्रेम है हर घडकन में तू ही समा है

तू ही प्रेम है

राम, रहीम, कृष्ण करीम

जोहराष्ट्र यीशु नानक कोई भी नाम जप ले रे मनवा

ईश्वर एक है

सत्य धर्म और शान्ति अहिंसा

प्रेम प्रभु का है रूप

कोई भी राह अपना ले मनवा

ईश्वर एक है

प्रेम धर्म है, प्रेम मर्म है

प्रेम पावन कर्म है

हर सांसों में तू ही समा है

ईश्वर प्रेम है

प्रभु तू ही प्रेम है।

10) स्वच्छ शरीर स्वस्थ मन अपना, सभ्य समाज बनायेंगे

नया सवेरा नया उजाला, इस धरती पर लायेंगे
जन्म जहाँ पर हमने पाया, अन्न यहाँ का हमने खाया
ज्ञान जहाँ से हमने पाया, तन पर जिसके वस्त्र सजाया
उस भारत माँ की सेवा में, हम सर्वस्व अपना लुटायेंगे
नया सवेरा....

हम सुधरेंगे युग सुधरेगा, हम बदलेंगे युग बदलेगा
जो अपना तन-मन धो लेगा, वह जग को नव-जीवन देगा
लेकर लाल मशाल क्रांति की, सारा विश्व जगायेंगे
नया सवेरा...

मानव सभी समान यहाँ पर, एक समान यहाँ नारी-नर
जाति वंश का भेद न तिस पर, गूंज रहा जय घोष निरन्तर
व्यक्ति और परिवार सजाकर, सारा विश्व सजायेंगे
नया सवेरा ...

11) हर देश में तू, हर वेष में तू, तेरे नाम अनेक, तू एक ही है ।

तेरी रंगभूमि, यह विश्वभरा, सब खेल में, मेल में तू ही तू है।
सागर में उठा बादल बनके, बादल से गिरा जल होकर के
तेरी नहर बनीं, नदियाँ गहरी, तेरे भिन्न प्रकार, तू एक ही है ।
हर देश.....

माटी से भी परमाणु बना, फिर दिव्य-जगत का रूप लिया
कहीं पर्वत वृक्ष विशाल बना, सौन्दर्य तेरा, तू एक ही है।
हर देश...

यह दिव्य दिखाया है जिसने, वह है गुरू देव की पूर्ण दया
तेरा दास कहे न कुछ और दिखा बस मैं और तू सब एक ही है।
हर देश...

12) ये वक्त न ठहरा है, ये वक्त न ठहरेगा यूँ ही ये गुजर जाएगा
घबराना कैसा.... हिम्मत से काम लेंगे....
सागर के सीने से पाये हैं जब मोती, लहरे कभी बलखायें ,घबराना कैसा.....

हिम्मत से काम लेंगे.....

ये सुख दुख जीवन में आते और जाते हैं दुख पहले आ जाये घबराना कैसा,
हिम्मत से काम लेंगे..... घबराना कैसा.....

ये महक गुलाबों की महकता है गुलशन, कांटा कभी लग जाये घबराना कैसा

हिम्मत से काम लेंगे ..... घबराना .

13) इतनी शक्ति हमें देना दाता, मन का विश्वास कमजोर हो न ।
हम चलें नेक रस्ते पे हम से, भूलकर भी कोई भूल न हो ।।

इतनी शक्ति...

दूर अज्ञान के हों अंधेरे, तू हमें ज्ञान की रोशनी दे।
हर बुराई से बचते रहें हम, जितनी भी दे भली जिंदगी दे।
बैर हो न किसी का किसी से, भावना मन में बदले की न हो।
हम चलें नेक रस्ते पे हम से, भूलकर भी कोई भूल न हो

इतनी शक्ति ...

हम न सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचें किया क्या है अर्पण ।
फूल खुशियों के बाँटे सभी को, सबका जीवन ही बन जाये मधुवना।
अपनी करूणा का रस तू बहा के, कर दे पावन हर एक मन का कोना।
हम चलें नेक रस्ते पे हम से, भूलकर भी कोई भूल न हो ।।

इतनी शक्ति ...

14) सभी भाषाएँ तेरे नाम, सभी दुनिया है तेरा धाम
नित्य निरंतर निराकार तू, प्रभु ईश्वर, अल्लाह
ब्रह्मा, विष्णु, महेश तू ही, तू शाहों का शाह

खुदा है तू, तू ही है राम, सभी दुनिया है तेरा धाम
महादेव शिवशंकर जिनवर रब रहीम रहमान
गॉड यहोवा परम पिता तू, अहूरमज्द भगवान
सिद्ध अर्हन्त निराकार बुद्ध निष्काम, सभी दुनिया है तेरा धाम
सेतुबन्ध, जेरुशलम, काशी, मक्का या गिरनार
सारनाथ, सम्मेत-शिखर में, तेरा ही विस्तार।
सिन्धु, गिरी, नगर, नदी, वन, ग्राम, सभी दुनिया है तेरा धाम

मंदिर मस्जिद, चर्च, जिनालय, सब धर्मालय एक
सबमें तेरी ही पूजा है तेरे रूप अनेक
सभी को वंदन, नमन सलाम सभी दुनियाँ है तेरा धाम

मंदिर में पूजा को जाऊँ, मस्जिद पढ़े नमाज
गिरजा की प्रेयर में देखें, मैं तेरी ही शान
एक हो जायें सलाम-प्रणाम सभी दुनिया में तेरा धाम
सभी भाषाएँ तेरे नाम, सभी दुनियाँ है तेरा धाम

15) अंधकार फैला है जग में, दीप जलाते चले चलो ।
खुशियाँ नाचे आंगन-आंगन, प्यार लुटाते चले चलो ।।
आशा हो तुम नवभारत की, अभिलाषा हो जनजन की ।
तुमने ही यशगान सुनाए, अमन शान्ति के दीप जलाए ।
मानवता की शान हो तुम, गीता और कुरान हो तुम,

इस दुनिया को आज, अमन पैगाम सुनाते चले चलो ।।
खुशियाँ नाचे आंगन-आंगन, प्यार लुटाते चले चलो ।।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई हम सब हैं भाई-भाई।
धर्म हमारा एक ही, कर्म हमारा एक हो।
हिमगिरी के अरमान हो तुम भारत माँ के प्राण हो तुम।
इस दुनिया को आज अमन पैगाम सुनाते चले चलो ।।2।।

भजगोविन्दम्

भज-गोविन्दम् इन दो शब्दों से बनी टेक में श्री शंकर भागवद् पाद मानवता के उद्धार के लिये समस्त वेदान्त और धर्म की शिक्षा की शिक्षा का सार प्रस्तुत किया है। आनन्द के राज्य अर्थात् गोविन्द-धाम में प्रवेश करने और अपने जीवन के वर्तमान संकटों की समाप्ति के लिये यह एक कुंजी है।

सरल मधुर और सुबोध 31 श्लोकों में सीधे सीधे उदाहरणों और उपयुक्त समतुल्य शब्दों द्वारा शंकराचार्यजी ने हमें जीवन की नश्वरता और भ्रामकता के सम्बंध में समझाया है प्रत्येक श्लोकों के साथ-साथ अज्ञान, भ्रम और मोह-माया का आवरण दूर होकर हमारी दूर्गति के निदान का पता चला है शंकराचार्यजी के इन श्लोकों की अदभुत् महिमा है - इतः इसे मोहमुदगर (सांसारिक मोह का नाश करने वाला) कहा गया है। उन्होंने हमारे जीवन के उन सभी पहलुओं को लिया है जिनके कारण हम अंधों की तरह बंधन में पड़ कर अज्ञान और विपत्ति के गहरे अंधकार में धंसते जाते हैं वे हम सभी से विवेकी और विवेचक बनने को कहते हैं उन्होंने नित्य और अनित्य, सत्य और मिथ्या, सांसारिक आकर्षणों में भटकावतथा वैराग्य के द्वंद के बीच विवेकी और विवेचक बनकर गोविन्द-इस परम सत्य की प्रतीति हेतु उनकी भक्ति को आधार बनाकर इस दृश्य-प्रपंच के दुखों से छुटकारा पाने की बात कही है।

वृंदावन (व्हाइट फील्ड, बैंगलोर) में 1973 में विद्यार्थियों के लिए आयोजित भारतीय संस्कृति और अध्यात्म पर आधारित ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम में भगवान श्री सत्य साई बाबा ने भज-गोविन्दम् के 31 पदों में से 16 पदों की व्याख्या अपने संभाषणों में सुमधुर कंठ से की थी। उन्होंने इसकी इतनी उत्कृष्ट ढंग से व्याख्या की थी कि ऐसा प्रतीत होता था - कि मानों स्वयं शंकराचार्यजी ही पदों के अर्थ समझा रहे हो।

इन्हीं 16 श्लोकों को बाल-विकास के अखिल भारतीय पाठ्यक्रम के तृतीय समूह में स्थान प्राप्त हुआ है। प्रथम वर्ष 1 से 8 श्लोक और द्वितीय वर्ष में 9 से 16 श्लोक पाठ्यक्रम में है।

नोट :- अमृत वर्षा, 1973 पुस्तक में समाविष्ट भगवान श्री सत्य साई बाबा के उद्बोधनों का अध्ययन बाल-विकास गुरुओं के लिए अनिवार्य है तब ही वे इन श्लोकों का सही भावार्थ बच्चों को समझा पाएगी।

<u>तृतीय समूह (प्रथम वर्ष)के लिए भजगोविन्दम् स्त्रोत के श्लोक</u>

1) भजगोविन्दम्, भजगोविन्दम्

भज गोविन्दम् मूढ़मते ।

संप्राप्ते सन्निहिते काले,

नहि नहि रक्षति डुकृञ्करणे ।।

(भजगोविन्दम् भजगोविन्दम्, गोविन्दम् भज मूढ़ मते ....)

भावार्थ : ओ अज्ञानी भगवान गोविन्द का यशोगान कर और ऐसे ही करता जा । मृत्यु के समय व्याकरण के नियम जिन्हें तुम रटकर कंठस्थ करना चाहते हो, तुम्हें बचाने में बिल्कुल समर्थन होंगे । यहाँ व्याकरण के नियमों से तात्पर्य है सब तरह का लौकिक ज्ञान और भौतिक सम्पत्ति । रे मूढ़मति यानी भौतिकवादी या पूर्णरूपेण सांसारिकता से ग्रस्त, जो ईश्वर अथवा मनुष्य के अंदर स्थित आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है, अर्थात् नास्तिक या अनात्मावादी है ।

2) बालस्तावत् क्रीडासक्तः

तरूणस्तावत् तरूणीसक्तः

वृद्धस्तावत् चिन्तासक्तः।

पारे ब्रह्मणि कोऽपि न सक्तः ।

(भज गोविन्दम् भज गोविन्दम्....)

भावार्थ : बाल्यकाल की अवस्था खेलकूद में चली गई युवा अवस्था (काल) स्त्री प्रेम और उससे आसक्ति में निकल गई । जैसे-जैसे उम्र बढ़ने लगी और वृद्धावस्था आई परिवार के भविष्य की चिंता सताने लगी - तात्पर्य पूरा जीवन किसी न किसी चिंता में बीत गया और वह अवस्था मनुष्य को कभी न मिली जिसमें वह मन को प्रभु के चिंतन में लगाता ।

3) सतसंगत्वे निस्संगत्वं

निस्संगत्वे निर्मोहत्वम् ।

निर्मोहत्वे निश्चलतत्वं

निश्चलतत्वे जीवनमुक्तिः ।।

(भज गोविन्दम् भज गोविन्दम् ....)

भावार्थ : सज्जनों के सत्संग से सांसारिक आकर्षण समाप्त हो जाता है। संसार से लगाव कम हो जाने से मोह का अंत हो जाता है । मोह नष्ट होने से अज्ञान का अंत हो जाता है। अज्ञान का अंत होने से मन एकाग्र हो जाता है और एकाग्र मन वाला मुक्ति का अधिकारी होता है ।

4) त्वयि मयि चान्यत्रैको विष्णुः व्यर्थं कुप्यसि मय्यसहिष्णुः ।

भव समचित्तः सर्वत्र त्वं वाञ्छस्यचिराद्यपि विष्णुत्वम् ।। (भज गोविन्दम् भज गोविन्दम् ...)

भावार्थ : तुझमें और मुझमें और सब जगह एक ही परमात्मा विष्णु का वास है परन्तु अलगाव की भावना के वश में होकर तुम परस्पर बुरा व्यवहार करते हो । सब में विष्णु के दर्शन का प्रयत्न करो जो तुम में भी है । अपने अहंकार और अलगाव का परित्यागकर सबके प्रति मित्रता और एकता का भाव रखो ।

5)प्राणायामं प्रत्याहारं नित्यानित्य विवेक विचारम् । जाप्यसमेत समाधि विधानं

कुर्ववधानं महदवधानम् ।। (भजगोविन्दम् भजगोविन्दम्....)

भावार्थ : प्राणायाम (जीवन शक्ति) वह साधना व अभ्यास है जिससे तुम प्राणवायु पर संयम करते हो । प्रत्याहार में इंद्रियों के द्वारा मन पर संयम किया जाता है । क्या सत्य है और क्या असत्य है इसे जानने का प्रयत्न करो जप और ध्यान के द्वारा शारीरिक व मानसिक चेतना को परम चेतना में मिलाने के लिए सदैव अथक प्रयत्न करते रहो ।

6) का ते कांता कस्ते पुत्रः संसारोऽयमतीव विचित्रः ।

कस्य त्वं कः कुत आयातः तत्वं चिन्तय तदिह भ्रातः ।। (भजगोविन्दम् भजगोविन्दम् ...)

भावार्थ : यथार्थ में तुम्हारी धर्म पत्नी कौन है ? तुम्हारा पुत्र कौन है ? इन पारिवारिक बन्धनों का सत्य क्या है । तुम किसके हो, कौन तुम्हारा है और कहाँ से आये हो, हे प्रिय बंधु, यह जानो क्योंकि इन प्रश्नों के उत्तर में ही सब ज्ञान निहित है । हे भाई इस सत्य को जानने का प्रयत्न करो ।

7) दिनमपि रजनी सायं प्रातः शिशिरवसन्तौ पुनरायातः ।
कालः क्रीडति गच्छत्यायुः तदपि न मुञ्चत्याशावायुः ।। (भजगोविन्दम् भजगोविन्दम् ....)

भावार्थ : दिन के पश्चात् रात्रि और रात्रि के उपरान्त दिन होता है । शिशिर के पश्चात् ग्रीष्म ऋतु, ग्रीष्म के उपरान्त शिशिर ऋतु कहने का तात्पर्य है कि समय का चक्र घूमता रहता है और साथ ही हमारा जीवन भी समाप्ति की ओर अग्रसर हो रहा है - फिर भी हम अपनी इच्छाओं को नियंत्रित नहीं करते, कम नहीं करते और न हम कामना -पाशों (आशा-पाशों) को ढीला करते हैं

8)योगरतो वा भोगरतो वा संगरतो वा संगविहीनः । यस्य ब्रह्मणि रमते चित्तं,

नन्दति नन्दति नन्दत्येव ।। (भजगोविन्दम् भजगोविन्दम् ....)

भावार्थ : चाहे कोई योगी हो और सादा जीवन व्यतीत करे, या भोगी हो जो विलासिता में दिन गंवाता है। चाहे किसी ने सब कुछ त्याग दिया हो चाहे वह समाज में रहे या जंगल में उसे सच्चा आनन्द प्राप्त नहीं हो सकता । परन्तु जिसने अपने मन को प्रभु चिंतन में लगा दिया है सच्चा व अखण्ड आनन्द उसी को प्राप्त होता है

<u>तृतीय समूह (द्वितीय वर्ष) के लिए भजगोविन्दम् के श्लोक</u>

9) भगवद्गीता किंचिद्धीता गंगाजललवकणिका पीता ।

सकृदपि येन मुरारिसमर्चा क्रियते तस्य यमेन न चर्चा ।।(भजगोविन्दम् भजगोविन्दम् ....)

भावार्थ : जिसने गीता का थोड़ा सा ही पाठ किया हो, गंगाजल की छोटी सी बंद भी ग्रहण की हो तथा हरिपूजा एक बार भी शुद्धमन से की हो, वह अमरत्व को प्राप्त होता है । अन्त समय में उसका सामना यमदूतों से नहीं होता ।

10) नलिनीदलगतजलमतितरलं, तद्वज्जीवितमतिशय चपलम् ।

विद्धि व्याध्यभिमान ग्रस्तं लोकं शोकहतं च समस्तम् ।। (भजगोविन्दम् भजगोविन्दम् ....)
भावार्थ : यह संसार उस चमकीली ओस बिन्दु के समान है जो कमल पत्र पर एकत्रित हो कम्पनशील और अस्थिर है । मानवजीवन भी इसी तरह अनिश्चित तथा रोग शोक से जकड़ा हुआ है वह किसी भी क्षण नष्ट हो सकता है अन्ततोगत्वा जीवन चिंता दुख और शोक से परिपूर्ण है ।

11) शत्रौ मित्रे पुत्रे बन्धौ मा कुरुयत्नं विग्रहसन्धौ ।। सर्वस्मिन्नपि पश्यात्मानं

सर्वत्रौत्सृज भेदाज्ञानम् ।। (भजगोविन्दम् भजगोविन्दम्....)

भावार्थ : यह विचार करना कि कुछ लोग तुम्हारे शत्रु हैं, कुछ मित्र हैं, कुछ तुम्हारे पुत्र हैं और कुछ तुम्हारे बन्धु हैं और फिर उनसे राग और द्वेष करना उचित नहीं है। तुम इन सबमें एक आत्मा का निवास देखो और माया (भेदभाव) के भ्रमजाल को त्याग दो।

12) अर्थमनर्थं भावय नित्यं,नास्ति ततः सुखलेशः सत्यम् ।

पुत्रादपि धनभाजां भीतिः, सर्वत्रैषा विहिता रीतिः ।। (भजगोविन्दम् भजगोविन्दम् .....)

भावार्थ : धन सम्पत्ति को सदैव हानिकारक समझो। यह निर्विवाद सत्य है कि धन से तनिक भी सुख प्राप्त नहीं हो सकता। धनी व्यक्ति को कभी-कभी अपने ही पुत्र से भी भय लगता है। इस संसार में यह सदैव होता है।

13)

पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम् । इह संसारे बहु दुस्तारे

कृपया ऽपारे पाहि मुरारे ।। (भजगोविन्दम् भजगोविन्दम् ....)

भावार्थ : बार-बार जन्म लेना और बार-बार माता के गर्भशय में रहने का कष्ट पाना - अर्थात् संसार के इस चक्र से छुटकारा पाना बडा कठिन है। अस्तु हे भगवान ! अपनी कृपा से मुझे इस विषय चक्र से मुक्ति प्रदान करें।

14) कामं, क्रोधं, लोभं, मोहं, त्यक्त्वाऽत्मानं पश्यति सोऽहम् ।
आत्मज्ञान विहीना मूढाः, ते पच्यन्ते नरक निगूढ़ाः ।।(भजगोविन्दम् भजगोविन्दम् . .)

भावार्थ : काम, क्रोध, लोभ. मोह दुर्गुणों को त्याग दो। तुम स्वयं यह प्रश्न करो कि तुम कौन हो। यदि तुम इतने मूढ़ हो कि तुम नहीं जानते कि तुम कौन हो तो तुम्हें इस संसार में और नरक के गर्त में अनन्त कष्ट झेलने पड़ेंगे।

15) गेयं गीतानामसहस्रं, ध्येयं श्रीपतिरूपमजसं

नेयं सज्जनसंगे चित्तं, देयं दीनजनाय च वित्तम् ।। (भजगोविन्दम् भजगोविन्दम् .

भावार्थ: गीता और विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ सदा करना चाहिए निरन्तर लक्ष्मीपति : विष्णु का ध्यान करो। मन को सत्संग में लगाना चाहिए तथा दीन-दुखियों को धन का दान देना चाहिए।

16) गुरुचरणाम्बुज निर्भरभक्तः, संसारादचिराद्भव मुक्तः ।

सेन्द्रियमानसनियमा देवम्, द्रक्ष्यसि निज हृदयस्थं देवम् ।।(भजगोविन्दम् भजगोविन्दम् .....)

भावार्थ : गुरू पर पूर्ण श्रद्धा रखो उनके चरण कमलों में अपने को अर्पण कर दो, तुम अवश्य सांसारिक दुखों से छुटकारा पाओगे। मन और इंद्रिय को वश में लाने पर परमात्मा को अपने हृदय में विराजमान देखोगे।

एक ही ईश्वर है- वह सर्वव्याप्त है।

एक ही धर्म है-वहप्रेम का है।

एक ही जाति है-वह मानवता की है।

एक ही भाषा है-एक ही भाषा है-वह हृदय की है। ..... श्री सत्य साई बाबा

श्री सत्य साई अष्टोत्तर शत नामावली

नोट:

ग्रुप (समूह) दो के लिए प्रथम वर्ष 1 से 36 द्वितीय वर्ष 37 से 72 एवं तृतीय वर्ष 73 से 108

1. ॐ श्री भगवान सत्य साई बाबाय नमः

2. ॐ श्री साई सत्यस्वरूपाय नमः

3. ॐ श्री साई सत्यधर्मपरायणाय नमः

4.ॐ श्री साई वरदाय नमः

5. ॐ श्री साई सत्पुरूषाय नमः

6.ॐ श्री साई सत्यगुणात्मने नमः

7.ॐ श्री साई साधुवर्तनाय नमः

8. ॐ श्री साई साधुजन पोषणाय नमः

9. ॐ श्री साई सर्वज्ञाय नमः

10. ॐ श्री साई सर्वजन प्रियाय नमः

11. ॐ श्री साई सर्वशक्ति मूर्तये नमः

12. ॐ श्री साई सर्वेशाय नमः

13. ॐ श्री साई सर्वसंगपरित्यागिने नमः

14. ॐ श्री साई सर्वान्तर्यामिने नमः

15. ॐ श्री साई महिमात्मने नमः

16. ॐ श्री साई महेश्वरस्वरूपाय नमः

17. ॐ श्री साई पर्तिग्रामोद्भवाय नमः

18. ॐ श्री साई पर्तिक्षेत्रनिवासिने नमः

19. ॐ श्री साई यशःकाय शिरडीवासिने नमः

20. ॐ श्री साई जोडि आदिपल्लि सोमप्पाय नमः

21. ॐ श्री साई भारद्वाज ऋषि गोत्राय नमः

22. ॐ श्री साई भक्तवत्सलाय नमः

23. ॐ श्री साई अपान्तरात्मने नमः

24. ॐ श्री साई अवतारमूर्तये नमः

25. ॐ श्री साई सर्वभयनिवारिणे नमः

26. ॐ श्री साई आपस्तम्बसूत्राय नमः

27. ॐ श्री साई अभयप्रदाय नमः

28. ॐ श्री साई रत्नाकरवंशोद्भवाय नमः

29. ॐ श्री साई शिरडीसाई अभेदशक्ति अवताराय नमः

30. ॐ श्री साई शंकराय नमः

31. ॐ श्री साई शिरडीसाईमूर्तये नमः

32. ॐ श्री साई द्वारिकामाईवासिने नमः

33. ॐ श्री साई चित्रावटी तट पुट्ट पर्ति विहारिणे नमः

34. ॐ श्री साई शक्ति प्रदाय नमः

35. ॐ श्री साई शरणागतत्राणाय नमः

36. ॐ श्री साई आनन्दाय नमः

37. ॐ श्री साई आनन्ददाय नमः

38. ॐ श्री साई आर्त्राणपरायणाय नमः

39. ॐ श्री साई अनाथनाथाय नमः

40. ॐ श्री साई असहायसहायाय नमः

41. ॐ श्री साई लोकबान्धवाय नमः

42. ॐ श्री साई लोकरक्षापरायणाय नमः

43. ॐ श्री साई लोकनाथाय नमः

44. ॐ श्री साई दीनजनपोषणाय नम

45. ॐ श्री साई मूर्तित्रयस्वरूपाय नमः

46. ॐ श्री साई मुक्तिप्रदाय नमः

47. ॐ श्री साई कलुषविदूराय नमः

48. ॐ श्री साई करूणाकराय नमः

49. ॐ श्री साई सर्वाधाराय नमः

50. ॐ श्री साई सर्वहृदयवासिने नमः

51. ॐ श्री साई पुण्यफलप्रदाय नमः

52. ॐ श्री साई सर्वपापक्षयकराय नमः

53. ॐ श्री साई सर्वरोगनिवारिणे नमः

54. ॐ श्री साई सर्वबाधाहराय नमः

55. ॐ श्री साई अनन्त नुतकर्तनाय नमः

56. ॐ श्री साई आदिपुरुषाय नमः

57. ॐ श्री साई आदिशक्तये नमः

58. ॐ श्री साई अपरूपशक्तिने नमः

59. ॐ श्री साई अव्यक्तरूपिणे नमः

60. ॐ श्री साई कामक्रोधध्वंसिने नमः

61. ॐ श्री साई कनकांबरधारिणे नमः

62. ॐ श्री साई अद्‌भुतचर्याय नमः

63. ॐ श्री साई आपद्बांधवाय नमः

64. ॐ श्री साई प्रेमात्मने नमः

65. ॐ श्री साई प्रेममूर्तये नमः

67. ॐ श्री साई प्रियाय नमः

68. ॐ श्री साई भक्तप्रियाय नमः

69. ॐ श्री साई भक्तमंदाराय नमः

70. ॐ श्री साई भक्तजन हृदयविहाराय नमः

71. ॐ श्री साई भक्त जनह्रदयालयाय नमः

72. ॐ श्री साई भक्तपराधीनाय नमः

73. ॐ श्री साई भक्तिज्ञान प्रदीपाय नमः

74. ॐ श्री साई भक्तिज्ञानप्रदाय नमः

75. ॐ श्री साई सुज्ञानमार्गदर्शकाय नमः

76. ॐ श्री साई ज्ञानस्वरूपाय नमः

77. ॐ श्री साई गीताबोधकाय नमः

78. ॐ श्री साई ज्ञानसिद्धिदाय नमः

79. ॐ श्री साई सुन्दररूपाय नमः

80. ॐ श्री साई पुण्य पुरुषाय नमः

81. ॐ श्री साई फलप्रदाय नमः

82. ॐ श्री साई पुरूषोत्तमाय नमः

83. ॐ श्री साई पुराणपुरुषाय नमः

84. ॐ श्री साई अतीताय नमः

85. ॐ श्री साई कालातीताय नमः

86. ॐ श्री साई सिद्धिरूपाय नमः

87. ॐ श्री साई सिद्धिसंकल्पाय नमः

88. ॐ श्री साई आरोग्य प्रदाय नमः

89. ॐ श्री साई अन्न वस्त्र दाय नमः

90. ॐ श्री साई संसारदुःखक्षयकराय नमः

91. ॐ श्री साई सर्वाभीष्टप्रदाय नमः

92. ॐ श्री साई कल्याणगुणाय नमः

93. ॐ श्री साई कर्मध्वंसिने नमः

94. ॐ श्री साई साधुमानसशोभिताय नमः

95. ॐ श्री साई सर्वमतसम्मताय नमः

96. ॐ श्री साई साधुमानसपरिशोधकाय नमः

97. ॐ श्री साई साधकानुग्रहवट वृक्ष प्रतिष्ठापकाय नमः

98. ॐ श्री साई सकलसंशयहराय नमः

99. ॐ श्री साई सकलतत्वबोधकाय नमः

100. ॐ श्री साई योगीश्वराय नमः

101. ॐ श्री साई योगीन्द्रवंदिताय नमः

102. ॐ श्री साई सर्वमंगलकराय नमः

103. ॐ श्री साई सर्वसिद्धिप्रदाय नमः

104. ॐ श्री साई आपन्निवारिणे नमः

105. ॐ श्री साई आर्तिहराय नमः

106. ॐ श्री साई शांतमूर्तये नमः

107. ॐ श्री साई सुलभप्रसन्नाय नमः

108. ॐ श्री भगवान श्री सत्यसाईबाबाय नमः

ज्ञान के सूत्र भगवान बाबा के सुवाक्य

(1) The ABC of life is "Always be careful"

जीवन का ए.बी.सी. है हमेशा सावधान रहो। (ऑल्वेज बी केयरफुल)

(2) Be good, see good, do good.

अच्छा बनो, अच्छा देखो, अच्छा करो।

(3) Please God, Please Man.

ईश्वर को खुश करना हो तो मानव को खुश रखो।

(4) Love all, Serve all. सबसे प्रेम करो, सबकी सेवा करो।

(5) Love is giving and forgiving, Self is getting and forgetting. देना एवं क्षमा करना, प्रेम है ; लेना तथा विस्मृत कर देना स्वार्थ है।

(6) The five D's are Duty, Devotion, Discipline, Dedication and Determination.

पाँच डी हैं - कर्तव्य (ड्यूटी), भक्ति (डिव्होशन), अनुशासन (डिसिप्लिन), समर्पण (डेडिकेशन) संकल्प (डिटरमिनेशन)

(7) Money comes and goes, Morality comes and grows. धन आता है और जाता है ; नैतिकता आती है तथा बढ़ती जाती है।

(8) Time waste is life waste.

समय का अपव्यय, जीवन का अपव्यय है

(9) Less luggage makes travel more comfortable. कम सामान से यात्रा अधिक सुखदायी होती है।

(10) Start the day with love, Fill the day with love, Spend the day with love, End the day with love.

प्रेम से दिन प्रारम्भ करो, प्रेम से दिन के क्षणों को भरो, प्रेम में दिन व्यतीत करो, प्रेम से ही दिन समाप्त करो।

(11) Care not for marks but for remarks.

मार्कस् (अंकों) की नहीं रिमार्कस् (टीका-टिप्पणी) की चिंता करो।

(12) Hands in society, Head in the forest. हाथ समाज में, मस्तिष्क जंगल में।

(13) Service to mankind is service to God. मानव सेवा ही माधव सेवा है।

(14) Be heroes not zeroes. हीरो बनो जीरो नहीं ।

(15) The three W's are Work, Wisdom and Worship. तीन डब्ल्यू हैं - कार्य (वर्क), ज्ञान (विज़डम), पूजा (वर्शिप)

(16)Watch your- W-Words, A-Action, T-Thoughts, C-Character, H-Heart. अपने शब्दों, कर्मों, विचारों, चरित्र और हृदय का निरीक्षण करो।

(17) Truth is God, God is truth. सत्य ईश्वर है, ईश्वर सत्य है ।

(18) The four S's are Self -Sacrifice, Self -Confidence, Self Satisfaction and Self Realisation.

चार एस हैं - आत्म त्याग, आत्मविश्वास, आत्म संतोष, आत्म बोध ।

(19) Love is God, God is Love, so live in love. प्रेम ईश्वर है, ईश्वर प्रेम है, इसलिए प्रेम से रहो ।

(20) Commerce without morality, science without humanity, politics without principle, education without character is not only useless but positively dangerous.

नीति के बिना व्यापार, मानवता के बिना विज्ञान, सिद्धांत के बिना राजनीति, चरित्र बिना शिक्षा न केवल व्यर्थ है, वरन खतरनाक भी है ।

(21) Control of speech is the best ornament and armament (weapon).

वाणी पर नियंत्रण सर्वोत्तम अलंकार है तथा शस्त्र भी है ।

(22) Love is selflessness, self is lovelessness. प्रेम निःस्वार्थता है, स्वार्थ प्रेमविहीनता है ।

(23) Bend the body, Mend the mind, End the senses. शरीर को झुकाओ, मन को सुधारो, इच्छाओं को समाप्त करो ।

(24) The name of Lord is more powerful than the form of the Lord. भगवान का नाम उसके स्वरूप की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होता है ।

(25) If you cannot oblige, at least speak obligingly.

यदि तुम सदा उपकृत नहीं कर सकते तो कम से कम विनीत भाव से बोलो ।

(26) He prays best who loves best.

जो सर्वोत्तम प्रेम करता है वही सर्वोत्तम प्रार्थना करता है

(27) Full effort is full victory. सम्पूर्ण प्रयास ही सम्पूर्ण विजय है ।

(28) Love as thought is truth, love as action is righteousness, Love as feeling is peace, Love as understanding is nonviolence.

प्रेम, चिंतन के स्तर पर सत्य है, क्रिया के रूप में सदाचार है, अनुभूति के स्तर पर शान्ति है, तथा समझ के स्तर पर अहिंसा है।

(29) If money is lost, nothing is lost; if health is lost, something is lost; if character is lost, everything is lost. यदि धन खोया तो कुछ नहीं खोया, यदि स्वास्थ्य खोया तो कुछ खोया, परतु चरित्र खोया तो सब कुछ खो जाता है ।

(30) The four F's are i) Follow the master ; ii) Face the devil iii) Fight till the end; iv) Finish the game.

चार एफ हैं -

1. अपने स्वामी का अनुसरण करो. 2. शैतान (बुराइयों) का डट के सामना करो. 3- अंत तक संघर्षरत् रहो. 4- खेल को समाप्त करो

(31) Prayer is the only way of bringing order and peace. अनुशासन एवं शान्ति प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग प्रार्थना है ।

(32) Prayer is not asking it is the longing of the soul. प्रार्थना याचना नहीं आत्मा की उत्कंठा है ।

(33) Duty without love is deplorable. Duty with love is desirable. Love without duty is divine. प्रेम के बिना कर्तव्य शोचनीय है, प्रेम के साथ कर्तव्य वांछित है, बिना कर्तव्य के सहज सरल प्रेम दिव्य है।

(34) Prayer is the key of the morning and the bolt for the evening. प्रार्थना प्रातःकाल की कुंजी एवं संध्या की अर्गला (सांकल) है ।

(35) Affection, reverence and devotion follow each other's footsteps.
स्नेह, आदर, भक्ति एक दूसरे के पदचिन्हों पर चलते हैं ।

(36) The desire for fruits is an obstacle between God and man. कर्मफल की आशा मानव एवं ईश्वर के मध्य एक बाधा है ।

(37) Work is worship, duty is God. कर्म ही पूजा है, कर्तव्य ही ईश्वर है।

(38) Man is God. The only difference being the God knows he is God while man does not. मनुष्य भगवान है । भिन्नता केवल यही है कि अवतार रूपी भगवान जानते हैं कि वह भगवान है, जब कि मनुष्य यह नहीं जानता है ।

(39) Action without prayer is blind ; grouping with prayer it becomes honest and effective. बिना प्रार्थना के कर्म करना, नेत्रहीन की तरह अंधकार में वस्तु खोजने के समान है, प्रार्थना द्वारा कर्म सच्चा और प्रभावशाली बन जाता है ।

(40) Kindness in words, creates confidence; Kindness in thought, creates profoundness; Kindness in giving, creates love. दयाभाव से पूर्ण वचन आत्मविश्वास उत्पन्न करते हैं, दयापूर्ण विचार गंभीरता उत्पन्न करते हैं, दयालुता पूर्ण दान प्रेम को जन्म देता है ।

(41) Haste makes waste, waste makes worry, so do not be in hurry. हडबडी से अपव्यय होता है, अपव्यय से चिंता होती है, इसलिए जल्दबाजी न करें।

(42) Caste without character is of no value. It is an empty label. बिना चरित्र के जाति का कोई महत्व नहीं है, वह तो सिर्फ एक खाली नाम-पत्र है।

(43) Love as thought is truth. Love as action is goodness. Love as feeling is beauty. प्रेम चिंतन के रुप में सत्य है । प्रेम कार्य के रुप में शिव है। प्रेम अनुभूति में सौन्दर्य है । (सत्यम् शिवम् सुन्दरम्)।

(44) The voice of God can be heard only in the depths of silence. मौन की गहराई में ही ईश्वर की आवाज सुनी जा सकती है ।

(45) The light is in you, you are in the light, the light and you are one, तुम्हारे अंतस् में प्रकाश है, तुम प्रकाश में हो, तुम और प्रकाश एक ही हो, तुम स्वयं प्रकाश हो ।

(46) Man without God is not man. God without man is God. भगवान के बिना मानव-मानव नहीं है मानव के बिना भगवान भगवान है ।

(47) The first step is man drinks wine, then wine drinks wine and then wine drinks man. प्रथम चरण में मनुष्य शराब पीता है, फिर शराब, शराब को पीती है तथा फिर शराब मनुष्य को पीती है ।

(48) Death is better than the bondage of ignorance. अज्ञान के दासत्व से मृत्यु अच्छी है

(49) The past is beyound recovery. The future you are not sure of. The given moment is now, sanctify it with good thoughts, good words and good actions.

भूतकाल वापस लौट कर नहीं आता। भविष्य के बारे में तुम अनिश्चित हो दिया गया क्षण वर्तमान ही है। इसे अच्छे विचारों, वाणी एवं कर्मों द्वारा पवित्र एवं शुद्ध करो।

(50) We are not one but three : a) What other think we are b) What we think we are.c) What we really are. हमारे एक नहीं वरन् तीन व्यक्तित्व हैं (अ) जो दूसरे सोचते हैं कि हम हैं (ब) जो हम सोचते हैं कि हम हैं (स) जो हम वास्तव में हैं।

(51) End of knowledge is love. End of culture is perfection. End of wisdom is freedom. End of eductation is character. ज्ञान का लक्ष्य प्रेम है। संस्कृति का लक्ष्य पूर्णता है। विद्या का लक्ष्य मुक्ति या मोक्ष है। शिक्षा का लक्ष्य चरित्र है।

रत्न(GEMS)

(1) To ease the strains of carrying on one's duties, these should be done while repeating the Name. स्वयं के कर्तव्यों की पूर्ति करते समय उत्पन्न तनाव को, दबावों को सुसह्य बनाने के लिये भगवत् नाम स्मरण के साथ कार्यों को संपन्न करना चाहिए।

(2) A kirtan doesn't depend on the correct Ragas and Tala. It should be done in ecstasy of love or as a spontaneous offering to God. कीर्तन केवल सही राग एवं ताल पर निर्भर नहीं होता वरन् प्रेम के अत्यानंद में विभोर होकर या ईश्वर के प्रति स्वयं स्फूर्त श्रद्धायुक्त अर्पण भाव से कीर्तन करना चाहिए।

(3) A vicious man keenly observes other's trifling blemishes, whereas he ignores his own glaring defects, even though he is aware of them.

दुष्ट प्रवृत्ति के लोग दूसरों के क्षुद्र दोषों को बड़ी उत्सुकता से देखते हैं जब कि वह अपनी बड़ी-बड़ी कमजोरियों को जानते हुए भी उनकी उपेक्षा करते हैं।

(4) Helping the vicious ones produces harmful results just as milk consumed by serpents adds to their venom. दुर्जनों की सहायता करने से दुःखदायी परिणाम निकलते हैं जैसे साँपों को दूध पिलाने से विष की ही वृद्धि होती है।

(5) It matters not which name we utter, so long as we do so regularly and continously. कौन-सा नाम हम जपते है, यह महत्वपूर्ण नहीं है, जब तक कि हम उसे नियम पूर्वक नित्य प्रति निरंतर लेते है।

(6) The desire for fruits is indeed the obstacle between us and God. Whereas disinterested love for God wins all. कर्मफलकी इच्छा रखना ही वस्तुतः हमारे एवं भगवान के मध्य बाधा है, जब कि भगवान के लिए निरपेक्ष प्रेम होने से सब वस्तुओं पर विजय प्राप्त होती है।

(7) An action will as a matter of course be attended by its result. An act, dedicated to God will produce greater result than one not so dedicated.

क्रिया या कर्म के साथ स्वाभाविक रुप से उसके परिणाम या फल जुड़े रहते हैं। जब कि भगवान को समर्पित किया गया कर्म, इस प्रकार समर्पित न किये गये कर्म की अपेक्षा अधिक फलदायी होगा।

(8) Anger and intolerance are the twin enemies of correct understanding. क्रोध और असहिष्णुता ही सही समझ के दो शत्रु हैं।

(9) At one time, I thought God was Truth, Now I know Truth is God. एक समय मैंने सोचा था ईश्वर ही सत्य है अब मैं जानता हूँ कि सत्य ही ईश्वर है।

(10) There are limits to the capacity of an individual and the moment he flatters himself that he can undertake all tasks, God is there to humble his pride.

प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता एवं सामर्थ्य की सीमाएं होती है। परंतु जब वह आत्म प्रशंसा कर, दर्प के साथ कहता है वह सब प्रकार के कार्यों का उत्तरदायित्व निभा सकता है, तब भगवान वहीं उसका अहंकार तोड़ देते है।

(11) Whenever I see an erring man, I say to myself; " I have also erred". When I see a lustful man, I say to myself "So was I once" and in this way I feel kinship with everyone in the world and feel that I cannot be happy without the humblest of us being happy.

जब कभी मैं गलती करने वाले किसी मनुष्य को देखता हूँ - मैं अपने आप से कहता हूँ मैंने गलती की हैं। जब मैं किसी विषयी को देखता हूँ, मैं अपने आप से कहता हूँ कि मैं भी कभी ऐसा ही था। इस प्रकार संसार के प्रत्येक प्राणी से मैं अपना संबंध अनुभव करता हूँ जब तक हम में से छोटे से छोटा जीव सुखी नहीं होता है तब तक मैं भी कभी सुखी नहीं हो सकता हूँ।

(12) Prayer is the only means of bringing about orderliness and peace and response in our daily acts. It is the key of the morning and bolt of the evening.

प्रार्थना ही एकमात्र साधन है जो हमारे दैनिक कार्योमें क्रमबद्धता, फल (प्रतिक्रिया) एवं शान्ति लाती है । वह प्रातः कालीन चाभी है और सायंकालीन अर्गला (कुंडी) है।

(13) My religion teaches me that whenever is distress which one cannot remove, one must fast and pray. Food for the body is not so necessary as prayer for the soul. मेरा धर्म मुझे सिखाता है कि

जब हमें विषम परिस्थिति एवं विपत्ति का सामना करना पड़ता है जिसका हम निवारण नहीं कर सकते हैं तो, व्यक्ति को प्रार्थना एवं उपवास करना चाहिए । शरीर के लिए भोजन इतना आवश्यक नहीं है जितनी कि आत्मा के लिए प्रार्थना।

(14) Prayer is not an asking, it is longing of soul. Prayer is first and the last lesson in learning the noble and brave art of sacrificing self.

प्रार्थना किसी वस्तु की याचना नहीं है। वरन् वह आत्मा की आंतरिक उत्कंठा है। आत्म बलिदान एवं त्याग की उत्तम एवं शक्तिशाली कला सीखने के लिए प्रार्थना प्रथम एवं अंतिम पाठ है।

(15) Satisfaction is in the effort, not in the attainment. Full effort is full victory. प्रयास करने में जो सुख एवं संतुष्टि है वह प्राप्ति में नहीं है। पूर्ण प्रयास ही पूर्ण विजय है।

(16) Ahimsa is the extreme limit of forgiveness; Ahimsa is imposible without fearlessness अहिंसा क्षमाशीलता की चरम सीमा को ही कहते है। और अहिंसा निर्भयता की भावना के बिना संभव नहीं है।

(17) The universe is ours to enjoy, but want nothing. To want is weakness, want makes us beggars and we are sons of the king, not beggars. सारा विश्व हमारे उपयोग के लिए है, परंतु किसी वस्तु की कामना मत करो। इच्छा या कामना मनुष्य की कमजोरी है, जो उसे भिखारी या याचक बना देती है। परंतु हम अमृतपुत्र अर्थात् ईश्वर के साम्राज्य के राजपुत्र हैं; भिखारी या याचक नहीं।

(18) Religion without Philosophy runs into superstition Philosophy without religion becomes dry athesim.

दर्शन के बिना धर्म अंधविश्वास बन जाता है और धर्म के बिना दर्शन कोरा नास्तिकवाद बन जाता है। (19) Be grateful to him who curses you for he gives you a mirror to

show that cursing is also a chance to practice self-restraint so

bless him and be glad.

जो आपको बद्दुआ देता है, उसके प्रति कृतज्ञ रहो क्योंकि वह तुम्हारे लिए दर्पण के समान है, जो तुम्हें दिखाता है कि श्राप देना क्या होता है। साथ ही तुम्हें आत्मसंयम के अभ्यास का अवसर देता है। अत: खुश हो जाओ एवं उसे आशीर्वाद दो।

(20) "Let nothing stand between God and your love for Him. Love Him, Love Him and let the world say what love is? Love is of three sorts, One demands, but gives nothing the second is exchange and third is love without thought of return love like that of the moth for the light".

ईश्वर एवं ईश्वर के प्रति तुम्हारे प्रेम के मध्य कुछ भी मत आने दो। उससे प्रेम करो, केवल प्रेम करो तथा संसार को सिखा दो कि प्रेम क्या होता है। प्रेम तीन प्रकार का होता है एक माँगता है परंतु देता कुछ भी नहीं है। दूसरा अदला बदली है अर्थात् माँगता भी है और देता भी है। तीसरा बदले में कुछ पाने की इच्छा के बिना प्रेम देता है। भगवान को वैसा ही प्रेम करो जैसे पतंगा दीपक से या ज्योति से कर सकता है।

(21) "Buddha set his greatest enemy free, because he by hating Buddha so much, kept constantly thinking of him, that thought, purified his mind and became ready for freedom; therefore the thought of God all the time will purify you".

भगवान बुद्ध ने अपने सबसे बड़े शत्रु को भी स्वतंत्र कर दिया। क्योंकि वह भगवान बुद्ध से अत्यधिक घृणा करता था, जिससे वह सतत् बुद्ध के विषय में ही चिंतन करता रहता था। भगवान बुद्ध के सतत् चिंतन से उसका मन पवित्र हो गया तथा वह मुक्ति का पात्र बन गया । इसलिए जानो कि सतत् चिंतन तुम्हें भी पवित्र बना देगा।

(22) The tendency to persist inspite of hindrances, discouragement and impossibilities it is this that in all things distinguishes the strong soul from the weak.

समस्त बाधाओं, विफलताओं और असंभावनाओं में निरंतर दृढ़ प्रयत्न करते रहने की भावना, सदैव कर्म में रत रहने की वृत्ति ही आत्मा की तेजस्विता एवं निर्बलता में भेद स्पष्ट करते हैं ।

(23) There is precious instruction to be got by finding we are wrong. Let a man try faithfuly, manfully to be right, he will grow daily more and more right.

अपने दोष एवं दुर्गुणों को जानने से हमें मूल्यवान शिक्षा मिलती है । यदि मनुष्य निष्ठापूर्वक प्रयत्न करे; साहस एवं दृढ़ संकल्प से सही रास्ते पर चले तो वह दिन प्रतिदिन अच्छाई, नेकी की ओर अग्रसर होता है ।

(24) When you give your love as the scent of the flower is given to the open air, then there is perfection.

जिस तरह पुष्प अपनी सुरभि वायु में फैलाता है इसी तरह जब तुम अपने प्रेम का प्रसार करोगे तभी पूर्णता प्राप्त कर सकोगे ।

(25) Just as is a beautiful flower of varied hues giving out sweet fragrance, so is a man who is full of sweetness and who practices it. जिस प्रकार भिन्न-भिन्न रंगों के सुंदर पुष्प अपनी मधुर सुगन्ध फैलाते हैं, उसी प्रकार

प्रेम रस रूपी मिठास से भरा हुआ मनुष्य चारों ओर प्रेमरस बिखेरता है ।

(26) If you have got rid of selfisness the gates of heaven will never be kept closed againsed you. यदि तुमने अपनी स्वार्थपरकता की भावना से मुक्ति पा ली है, तो स्वर्ग के द्वार तुम्हारे

लिए कभी बंद नहीं होंगे ।

(27) Walk by the light of my Love, thou shalt cast no shadows. मेरे प्रेम की ज्योति के प्रकाश में साथ-साथ चलो, तुम्हारी परछाईयाँ नहीं पडेगी ।

(28) Affection, Reverence and devotion, all follow in each other's

footsteps. स्नेह, सम्मान एवं भक्ति तीनों क्रमश: एक दूसरे के पदचापों का अनुसरण करते हैं।

(29) Some give their soul to the Divine, some their life, some other their work, some their money. A few consecrate all of themselves and all they have soul, life, work wealth and health. These are the true children of God.

कुछ लोग भगवान को अपनी आत्मा अर्पित करते हैं, कुछ अपने कर्म, कुछ अपना धन अर्पित करते हैं, परंतु कुछ होते हैं जो ईश्वर के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देते हैं अर्थात् वे अपनी आत्मा, जीवन कर्म, व धन अर्पित कर देते हैं ; वास्तव में वे ही ईश्वर की सच्ची सन्तानें है।

(30) Real education consists in drawing the best out of yourself. What better book can there be than the book of humanity ? सच्ची शिक्षा से तात्पर्य है, स्वयं में निहित अत्युत्कृष्टता की अभिव्यक्ति करना । मानवता की पुस्तक की अपेक्षा अन्य कौन-सी पुस्तक इसके लिए श्रेष्ठ हो सकती है?

(31) What good is it if we acknowledge in our prayer that God is the father of us all, and in our daily lives do not treat every man as our brother.

इससे क्या लाभ कि हमारे प्रतिदिन की प्रार्थनाओं में हम भगवान को सबका परम पिता कहते हैं परंतु अपने प्रतिदिन के जीवन में व्यावहारिक रूप से प्रत्येक मनुष्य के साथ भाई की तरह व्यवहार नहीं करते हैं ।

(32) Action without prayer is blind groping ; with prayer it becomes honest and effective.

प्रार्थना रहित कर्म उसी प्रकार हैं जैसे कोई अंधा कुछ खोज रहा हो प्रार्थना उसे अच्छा और प्रभावशाली बना देती हैं ।

(33) Education to be complete, must be humane, it must include not only the training of the intellect but also the refinement of the heart and the discipline of the spirit.

मानवता से भरी शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है उसके अंतर्गत केवल बुद्धि का प्रशिक्षण ही नहीं वरन् हृदय की परिष्कृत एवं आत्मानुशासन भी समाहित होना चाहिए ।

(34) The Sandalwood retains its fragrance even when it is ground several times, the sugarcane ontinu be sweet even when cut into pieces ; gold maintains its attractive feature despite persistent melting. In the same manner the excellent souls never deviate from their inborn virtues till their end.

बार-बार घिसने पर भी चंदन अपनी सुगंध कायम रखता है गन्ने को टुकड़ों में काटने के बाद भी, वह मीठा ही स्वाद देता है, सोने को सतत् गलाने के बाद भी उसकी चमक व सार्थकता की विशेषता स्थायी रहती है। इसी प्रकार महापुरूष भी अंत तक अपने जन्मजात गुणों को नहीं छोड़ते, न ही अपने पथ से विचलित होते हैं।

(35) Trees laden with fruits bend down. Clouds with the weight of fresh vapour lie low. Noble souls do not get puffed up with riches. This is the natural feature of benevolent persons. फलों से लदे वृक्ष झुक जाते हैं। ताजा वाष्प कणों से युक्त बादल आकाश में नीचे होते हैं उदात्त एवं श्रेष्ठ आत्माएं धन दौलत का कभी गर्व नहीं करती। परोपकारी

व्यक्तियों का तो यह स्वाभाविक गुण है।

(36) As a rule one gets results consistant with the action he performs. Even the lord of universe had to remian in detention, as he had on an earlier occasion detained Mahabali (Lord Vishnu in his Vaman Avather captured Mahabali) Later on in his Krishna Avather, the lord was fastened to a stone by mother Yashoda.

व्यक्ति को उसकी क्रियाओं के अनुरूप ही फल प्राप्त होते हैं। मनुष्य रूप में विश्वेश्वर को भी बंदी बनना पडा था क्योंकि पूर्व में एक बार उन्होंने महाबली को बंधक बनाया था। (वामन अवतार में भगवान विष्णु द्वारा महाबली को बंदी बनाया गया था) बाद में कृष्ण अवतार में माँ यशोदा ने भगवान को पत्थर से बांधा था।

37) Kind words do not cost much. They never blister the tongue or lips though they do not cost much, they accomplish much. They make other people good natured. They also produce their own image on men's souls, and a beautiful image it is.

दयायुक्त वचन बोलने में व्यय नहीं होता। उससे जिव्हा या होठों पर छाले नहीं पडते हैं। वचन मूल्यवान नहीं उन वचनों का मूल्य नहीं चुकाना पड़ता परंतु वे महत्वपूर्ण काम को पूर्ण करने में सहायक होते हैं। वे दूसरे मनुष्य को भी अच्छा स्वभाव वाला बनाते हैं। मीठे व दया से भरे वचन मानव की आत्मा पर सुंदर व अमिट छाप छोड जाते हैं।

38) The evil that we see in others is nothing but the reflection of the evil within overselves, For the man of truth there is nothing bad or sinful in the world, because the pure and glorious Love which he possesses in his heart does not see defects in anyone, Verily when this love works, then condemnation has no place.

जो बुराई हम दूसरों में देखते हैं, वह हमारे अंतस् की बुराई की प्रति छाया है । सच्चे इंसान के लिए संसार में कुछ भी बुरा अथवा पापमय नहीं है, क्योंकि वह अपने निर्मल एवं भव्य प्रेम के कारण किसी में भी बुराई नहीं देखता वास्तव में जब यह प्रेम कार्य करता है तो निन्दा के लिए कोई स्थान नहीं रहता ।

(39) However much a man may speak, by that reason he is not called a wise man. A patient, loveful, unhating man is called a wise man. अधिक बोलने वाला व्यक्ति बुद्धिमान नहीं कहलाता । धैर्यवान, प्रेममय एवं

घृणारहित मनुष्य ही बुद्धिमान कहलाता है ।

(40) What exactly is man's duty ? First he should treat his parents with love, reverence and gratitude. Second-Sathyam Vada and Dharmam Chara-Speak the truth and act virtuously. Third whenever you have a few moments to spare, repeat the Name of the Lord with the form in your mind. Fourth-never indulge in talking ill of others or try to discover faults in others and finally

do not cause pain to others in any form. मनुष्य का वास्तविक कर्तव्य क्या है ? सर्वप्रथम अपने माता-पिता की प्रेम, श्रद्धा व कृतज्ञता से सेवा करनी चाहिए । दूसरा सत्यं वद धर्मचर अर्थात सत्य बोलो एवं सद् आचरण करो । जब भी फुरसत हो, ईश्वर के किसी भी रुप का जप सहित ध्यान करो। चतुर्थ दूसरों की बुराई करने में आनंद मत लो या दूसरों में दोष खोजने का प्रयास मत करो और अंत में किसी भी प्रकार से दूसरों को दुःख मत पहुँचाओ।

(41) No one is so rich that he does not need another's help; no one is so poor as not to be useful in some way to his fellow-men; and the disposition to ask assistance from others with confidence and to grant it with kindness is part of our very nature.

कोई भी इतना धनी नहीं होता कि उसे दूसरों की सहायता की आवश्यकता ही न पड़े। कोई भी इतना निर्धन नहीं होता कि अपने बंधुबाँधवों के काम न आ सके विश्वास के साथ दूसरों से सहायता की याचना करना तथा दूसरों को दयालुता से सहायता पहुँचाना हमारी मूल प्रकृति है । (तथा मनुष्य होने के नाते यह हमारा कर्तव्य भी है ।)

(42) Do not be forgetful of your prayer. Every time you pray: if your prayer is sincere, there will be new feeling and new meaning in it, which will give you fresh courage, and you will understand that prayer is an education.

प्रार्थना को विस्मृत नहीं करो । निरन्तर प्रार्थना करते रहो । हर बार की गई प्रार्थना,यदि वह सच्चे मन से की गयी हो, तो तुम्हें नई अनुभूति, नया अर्थ, नया साहस एवं उत्साह प्रदान करेगी और तुम्हें अनुभव होगा कि प्रार्थना ही सच्ची शिक्षा है

(43) God looks not at the oratory of your prayers, how elegant they may be ; nor at the geometry of your prayer, how long they may be; not at the arithmetic of your prayer, how

many they may be; nor at the logic of your prayer, how methodical they may be ; but the sincerity of them he looks at.

भगवान तुम्हारी प्रार्थना का धारा प्रवाहता की ओर ध्यान नहीं देते चाहे वह कितना ही सुंदर क्यों न हो, न ही उसके नाप की ओर, कितनी लंबी वे क्यों न हों, न ही उसकी गणना की ओर, गिनती में कितनी बार भी क्यों न हो, वे तो तुम्हारी प्रार्थना की सच्चाई से ही प्रभावित होते हैं

(44) He prayeth best who loveth best ; All things great and small; For the dear God who loveth us; He made and loveth all. संसार की बडी एवं छोटी वस्तुओं को जो उत्कृष्ट प्रेम करता है वही सच्ची प्रार्थना करता है क्योंकि प्रिय प्रभु, जो हमसे प्यार करते हैं उन्हीं ने सबको बनाया है और वे सबसे प्रेम करते हैं ।

(45) Quest. Should we pray to God aloud ?

Ans. Pray upto Him in any way you like. He is always sure to hear you. He can hear the foot fall of an ant.

प्रश्न : क्या हमें ईश्वर की प्रार्थना सस्वर करनी चाहिए ।

उत्तर : जिस किसी भी प्रकार से प्रभु की प्रार्थना करो वह निश्चय ही तुम्हें सुनेगा वह

तो चींटी के पदचाप भी सुनता है ।

(46) Quest. Is there really any efficiency in prayer ?

Ans. Yes when mind and speech unite in earnestly asking for a thing, that prayer is answered. The prayer of that man are of no avail who says with his tongue, "These are all Thine. O Lord ?" but at the same time thinks in his heart that all of them are his.

प्रश्न : क्या प्रार्थना में कोई सामर्थ्य है ?

उत्तर : हाँ ! परंतु जब तुम्हारे मन एवं वचन में एकरूपता होगी तभी प्रार्थना का उत्तर मिलेगा और इच्छित वस्तु प्राप्त होगी । जो मनुष्य केवल वाणी से कहता है, कि, हे प्रभु सभी कुछ आपका है', परंतु अंतस् में सोचता है कि सभी कुछ मेरा है, उसकी प्रार्थना कभी स्वीकार नहीं होगी।

(47) Prayer must emanate from the heart, Where God resides, and not from the head where doctrines and doubts clash. प्रार्थना हृदय से उत्स्फूर्त होनी चाहिए, जहाँ ईश्वर का वास होता है, न कि मस्तिष्क

से जहाँ सिद्धांत एवं संदेह टकराते हैं ।

(48) A ripe fruit by falling to the ground, unnoticed by us, does not

waste itself, but returns its seed to Mother Earth, only to appear

again as a fruit offering to others. A good man is the gift of God

and a path maker. पका हुआ फल वृक्ष से गिरकर भी बेकार नहीं जाता चाहे हमें उसका ज्ञान भी न हो । वह पृथ्वी माता को अपना बीज लौटाकर फिर उपजता है । प्रत्येक अच्छा आदमी भगवान का उपहार है तथा पथ प्रदर्शक है ।

(49) The prayer has saved my life. Without it, I should have been a lunatic long ago. I had my share of the bitterest public and private experience. They threw me in temporary despair. If I was able to get rid of that despair, it was because of prayer. प्रार्थना ने मेरा जीवन बचाया है । प्रार्थना के बिना मैं बहुत समय पहले ही विक्षिप्त हो गया होता । मेरे वैयक्तिक एवं सामाजिक जीवन में अत्यधिक कटु अनुभव आये, जिससे मैं अस्थायी रूप से निराशा की गर्त में फेंका गया था । यदि उस निराशा की गर्त से मैं मुक्ति पा सका है तो वह सिर्फ प्रार्थना के कारण ही है ।

(50) In talking with people, do not begin by discussing the things on which you differ. Begin by emphasizing and keep on emphasizing the things on which you agree.

व्यक्तियों से वार्तालाप से समय जिन बातों में मतभिन्नता हो, उससे अपनी वार्ता आरंभ न करो । जिन बातों में आप सहमत हों, उन पर जोर देते करें, तथा उन्हीं पर बल दो । हुए ही वार्ता प्रारंभ

(51) There is no physician like cheerful thought for relieving the ills

of the body. शरीर की बीमारियों से मुक्ति पाने के लिए प्रसन्न सुखद विचार जैसा कोई दूसरा चिकित्सक नहीं है ।

(52) The world is a looking-glass and gives back to every man the reflection to his own face, Frown at it with and it will in turn look sourly upon you ; laugh at it and with it and it is a jolly, kind companion, and so let all young persons make their choice.

संसार एक दर्पण है, प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के चेहरे का प्रतिबिंब वापस लौटाता है। उसकी तरफ गुस्से से नाक भौं- चढ़ा कर देखो और वह आपकी ओर कड़ुवाहट से देखेगा उस पर हँसो, उसके साथ हँसो वह भी हँसता है, सौहार्द्पूर्ण साथी होता है। सभी युवकों को सोचना है कि वे क्या चुनें ।

बालकों के लिए आचार संहिता

(1) प्रातः बिस्तर से उठते ही कराग्रे वसते लक्ष्मी श्लोक का पाठ करना । धरती माता को प्रणाम करना । घर के बड़ों को प्रणाम करना ।

(2) प्रतिदिन सुबह उठ कर व रात्रि को सोने के पूर्व दांत साफ करना ।

(3) सुबह-शाम भगवान, माता-पिता व बड़ों को प्रणाम करना ।

(4) प्रतिदिन स्नान करना, नाखून, कान, नाक और बाल साफ करना ।

(5) साफ-सुथरे कपड़े पहनना

(6) स्वच्छ व ताजा भोजन आवश्यकतानुरूप खाना, जूठन न छोड़ना

(7) प्रार्थना, श्लोक पाठ, नाम स्मरण, जप ध्यान प्रतिदिन करना

(8) पाठशाला में नियमित व समय पर जाना, गृहपाठ (होमवर्क) समय पर सही ढ़ंग से करना ।

(9) खुली हवा में नियमित व्यायाम करना

(10) रात को जल्दी सोकर सुबह जल्दी उठना ।

(11) श्री सत्य बाल-विकास कक्षा में नियमित व समय पर उपस्थित होना और गुरू के आदेशानुसार आचरण करना ।

(12) अपना घर व वातावरण साफ-सुथरा रखना और घर के कामों में हाथ बटाना ।

(13) महीने में कम से कम एक बार नारायण सेवा करना ।

(14) अच्छा देखो, अच्छा सुनो व अच्छा करो सूत्र का पालन करना ।

(15) परमेश्वर से प्रेम करना और पापों का तिरस्कार करना ।

(16) अंधे, विकलांगो और वृद्धों की सहायता और बिमारों की सेवा करना (17) कानून व नियमों का पालन कर आदर्श नागरिक बनना ।

(18) माता-पिता की आज्ञा मानना, उनकी सेवा करना

बालकों के लिए आध्यात्मिक डायरी

प्रतिदिन मैने क्या किया ?

पूरे माह प्रतिदिन भरना है (1 से अंतिम तारीख तक) हाँ के लिए 'ॐ' एवं नहीं के लिए "x" लिखना चाहिए।

क्रमांक	दैनिक आचरण	हाँ (ॐ)	नहीं ("x")
1.	प्रातःकाल की प्रार्थना		
2.	धरती माता की प्रार्थना		
3.	भगवान को प्रणाम		
4.	माता-पिता को प्रणाम		
5.	बड़ों का आदर		
6.	जप व ध्यान		
7.	भोजन पूर्व प्रार्थना		
8.	दीपक प्रार्थना		
9.	शयन पूर्व प्रार्थना		
10.	सत्य का पालन		
11.	वाणी का संयम		
12.	कोई सेवा कार्य		
13.	निद्रा की		
14.	भोजन व पानी का अपव्यय		
15.	पैसों की बचत		
16.	पारिवारिक भजन करना		

माता-पिता से निवेदन :-

उपरोक्त दिनचर्या बच्चों की अन्तः दृष्टि जागृत करेगी । वे अधिक बुद्धिमान, विवेकशील व चरित्रवान बनेंगे । अतः आप इसे पालन कराने में बाल विकास गुरू को सहयोग दें । इसके लिए छपी आध्यात्मिक डायरी ले लें यदि उपलब्ध नहीं है तो हर माह की 1 से 30 /31 तारीख तक कॉपी पर लाइनें खींचकर डायरी अवश्य भरायें ।

सर्वव्यापी श्री सत्य साई बाबा

भगवान का अवतरण

जब-जब होय धरम की हानी, बाढ़हिं असुर अधम अभिमानी । तब-तब प्रभु धरि मनुज शरीरा, हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा ।।

- गोस्वामी तुलसीदास

प्रथम आगमनः

युग-अवतार भगवान श्री सत्य साई बाबा ने अपने गुरू-पूर्णिमा संदेश 6 जुलाई 1963 को सार्वजनिक घोषणा की थी कि मैं भारद्वाज गोत्र में इस समय शिव-शक्ति के रूप में आया हैं। इसके पूर्व में मैं शक्ति रूप में इसी भारद्वाज गोत्र में आया था अब आगे मैं शिव स्वरूपा प्रेम-साई के रूप में पुनः भारद्वाज गोत्र में अवतार लूंगा । मेरा यह अवतार कर्नाटक प्रान्त के मांडया जिला में होगा ।

भगवान श्री शिरडी बाबा ने 15 अक्टूबर 1918 (विजयादशमी) को दोपहर 2.35 बजे महासमाधि ली । उसके पहले उन्होंने अपने प्रिय भक्त अब्दुल, काका साहिब दीक्षित जस्टिस रेगे तथा शारदा देवी से कहा था कि मैं 8 सालों बाद फिर से महाराष्ट्र प्रान्त से लगे हुए आन्ध्र प्रदेश में जन्म लूँगा ।

द्वितीय आगमनः

सन् 1926 को 23 नवम्बर, दिन सोमवार को रत्नाकर राजू वंश में श्री सत्य साई बाबा ने जन्म लिया । इनका नाम सत्यनारायण रखा गया आन्ध्रप्रदेश के अनंतपुर जिले का पुट्टापर्ती उसी दिन से प्रसिद्धि पाने लगा और आज तो वह शिरडी, मथुरा, काशी आदि महातीर्थों की तरह संसार में विख्यात हो चुका है ।

अवतार घोषणाः

बालक सत्या में अद्भुत शक्तियाँ थीं, जिनके कारण वह धीरे-धीरे सबके प्यारे बनते गये । बाल्यकाल से वे 16 वर्ष की उम्र तक दिव्य लीलायें करते रहे । 14 वर्ष की उम्र में 23 मई 1940 को बालक सत्या ने अपने माता-पिता के सामने यह घोषणा की थी कि मैं तुम सबकी विपदायें दूर करने आया हैं

20 अक्टूबर 1940 को 14 वर्ष की छोटी उम्र में पाठशाला से आकर सत्या ने कहा था मेरा अब तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं रहा। मुझे बहुत काम करना है, मेरे भक्त मुझे पुकार रहे हैं। परिवार वालों से ऐसा कहकर सत्या ने सदा के लिए, लोक-कल्याण हेतु घर छोड़ दिया।

प्रथम उपदेश :

बाबा ने अपने बड़े भाई से कहा था माया जा चुकी है। हमारा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं। याद रखो मैं साई बाबा हूँ। ऐसा कहकर सैकड़ों लोगों के सामने उन्होंने अपना पहला उपदेश दिया था :

मानस भजरे गुरू चरणम् दुस्तर भवसागर तरणम्

आध्यात्मिक आंदोलन का शंखनाद :

अब सत्य बाल-साई के रूप में लोक-सेवा में जुट गये। धीरे-धीरे भजन- नाम संकीर्तन. नगर संकीर्तन - प्रभातफेरी तथा दिव्य लीलाओं द्वारा पुट्टपर्ती मंदिर (प्रशांति निलियम) सारे संसार का आध्यात्मिक केन्द्र बन गया। वहाँ जाकर शान्ति और आनंद प्राप्त करने वालों की भीड़ बढ़ती गई। आज विश्व के विभिन्न देशों में करोड़ों लोग संगठित होकर ध्यान, नाम-जप, भजन, नारायण सेवा, (दीन दुखियों की सेवा) आदि लोक कल्याणी समाज सेवा कार्य करने लगे हैं।

पुनरावतार घोषणा :

1968 में गोवा में, हजारों भक्तों के बीच श्री सत्य बाबा ने कहा था कि 96 वर्ष की आयु बाद में तीसरी बार प्रेम साई के रूप में आऊंगा। इस प्रकार तीनों अवतारों के 300 वर्षों के पवित्र पृथ्वी प्रवास में, धर्म-स्थापना का महान कार्य पूरा हो जायेगा। इसके बाद मानवता हजारों साल तक शान्ति और प्रेम-पूर्वक रहेगी।

साई का मिशन :

श्री शिरडी साई बाबा ने सर्वधर्म समभाव को लेकर जगत में दिव्यता को प्रकट किया था। श्री पुट्टपर्ती सत्य साई उस दिव्यता से प्रत्येक मनुष्य में आध्यात्मिक परिवर्तन कर रहे हैं। सन् 2021 के बाद श्री प्रेम साई अवतार इस दिव्यता का सम्पूर्ण विश्व में प्रसार करेंगे।

श्री सत्य साई सेवा संगठन : एक परिचय

श्री सत्य साई सेवा संगठन भगवान श्री सत्य साई बाबा की प्रेरणा तथा मार्गदर्शन में स्थापित अध्यात्म के मूल स्रोत पर आधारित एक सेवा संगठन है। वह कोई धर्म का प्रचार अथवा धर्म परिवर्तन करने वाला संगठन नहीं है। इसकी स्थापना सम्पूर्ण मानवता की भलाई के लिए हुई है, जहाँ पर किसी प्रकार की श्रेष्ठता अथवा

भेदभाव नहीं है। इस संगठन में प्रत्येक धर्म, मूल, राष्ट्रीयता, जाति, मत अथवा पंथ के मानव का स्वागत है। समस्त भू-भाग में सत्य साई सेवा समितियाँ (केन्द्र) स्थापित हैं, जिसके सदस्य विभिन्न जाति-समूहों तथा विभिन्न धर्मों के होते हुए, अपने अपने पवित्र धर्मों की दी गई शिक्षाओं को हृदयंगम करते हुए तथा अपने अपने धार्मिक कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए एक साथ, एकजुट होकर मानवता की सेवा करने के लिए इस दृढ़ विश्वास के साथ इस संगठन में शामिल हुए है कि मानव सेवा ही परमात्मा की पूजा है।

संगठन के सेवाकार्य:

परहित सरिस धरम नहीं भाई।

पर पीड़ा सम नहि अधमाई ।।

- गोस्वामी तुलसीदास

संगठन में प्रमुख रूप से जो विश्व-व्यापी सेवाकार्य हो रहे हैं वे निम्न तीन विभागों में बाँटे गये हैं :

(अ) आध्यात्मिक सेवाकार्य:

भजन, प्रभातफेरी-नगर संकीर्तन द्वारा मानव-मन व वातावरण को पवित्र करना। इसके लिए सप्ताह में एक दिन 1 घण्टे भगवान के भजन करना, प्रभातफेरी (नगर- संकीर्तन) निकालना। सत्संग में प्रभु, धर्म चर्चा आध्यात्मिक चर्चा करना। जहाँ भक्त इसे करने लगें वहाँ भजन मण्डली की स्थापना होती है।

(ब) शैक्षणिक सेवाकार्य :

किसी गाँव /शहर में भजन के साथ-साथ यदि बच्चों में संस्कार गुण विकास हेतु बाल-विकास की कक्षायें सप्ताह में एक दिन लगाई जावें तो वहाँ श्री सत्य साई सेवा समिति बनती हैं। ऐसी कक्षायें बाल-विकास कहलाती हैं जिसमें 4 से 13 /14 वर्ष तक के बच्चों को तीन समूहों में निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। इन कक्षाओं में मानवीय मूल्यों की शिक्षा दी जाती है।

(स) अन्य सामाजिक सेवाकार्य:

असहाय, अपंग, रोगी, वृद्धजनों की यथा-सम्भव अन्न, वस्त्र दवा आदि से सेवा की जाती है, जिसे नारायण सेवा कहा जाता है। नारायण सेवा करने को बाबा ईश्वर सेवा कहते हैं। ग्राम विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत अविकसित ग्रामों को गोद लेना, रक्तदान, चक्रवात तथा बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं में सेवा करना, वृद्धाश्रमों एवं कुष्ठाश्रमों एवं अपंगों के आश्रम में उनसे भेंट कर उनका मनोबल बढ़ाना आदि कार्य भी किये जाते हैं।

मानव जाति की सेवा का अवसर परमेश्वर का प्रसाद समझो। पूर्ण कृतज्ञता से करो क्योंकि स्वयं परमेश्वर तुम्हारी उस सेवा को स्वीकार करते हैं - ग्रहण करते हैं।

श्री सत्य साई बाबा

संगठन के नियम:

सभी सदस्यों को अपने दैनिक जीवन में साधना करते हुए निम्नलिखित 9 नियम आचण में लाने और अच्छे नागरिक बनने के लिए 10 दैवी आदेशों का पालन करना आवश्यक है

साई भक्तों व कार्यकर्ताओं के आचरण के नौ नियम

1. प्रतिदिन अपने धर्मानुसार ईश्वर प्रार्थना, ध्यान एवं जप करना ।

2. प्रति सप्ताह परिवार के साथ भजन (नाम-संकीर्तन) एवं प्रार्थना करना।

3. समिति केन्द्रों द्वारा आयोजित बाल-विकास कार्यक्रमों में भाग लेना तथा अपने

बच्चों को बाल विकास कक्षाओं में शिक्षा हेतु भेजना

4. समिति द्वारा आयोजित भजनों में कम से कम माह में एक

5. समिति के समाज सेवा तथा अन्य कार्यक्रमों में भाग लेना । 6. साई साहित्य का नियमित अध्ययन एवं पठन ।

बार अवश्य भाग लेना

7. इच्छाओं को सीमित कर बचाए हुए धन को मानव सेवा में लगाना

8. जो भी संपर्क में आये उन सभी से कोमलता व प्रेम-पूर्वक बोलना

9. दूसरों की निन्दा, विशेषत: उनकी अनुपस्थिति में नहीं करना ।

आदर्श नागरिक बनने के दस दैवी आदेश

1. मातृभूमि से प्रेम करो । अन्य देशों से घृणा नहीं ।

2. अपने धर्म में दृढ़ विश्वास के साथ, सभी धर्मों का सम्मान

3. सबसे बिना मतभेद प्रेम करो ।

4. घर, पर्यावरण साफ रखो तथा स्वच्छ एवं सुखी रहो करो ।

5. भिखारियों की सहायता पैसे देकर मत करो, उन्हें आत्मनिर्भर बनने में सहायता करो। वृद्ध, रोगी, अपाहिज आदि लोगों को अन्न-वस्त्र, आवास, दवा (औषधि) आदि से सहायता करो ।

6. रिश्वत, घूस आदि नहीं लो और किसी को दो भी नहीं।

7. किसी से भी घृणा, ईर्ष्या मत करो ।

8. अपने काम के लिए दूसरों पर आश्रित नहीं रहो । दूसरों की सेवा करने के पूर्व अपने सेवक स्वयं बनो ।

9. देश के कानून का उल्लंघन मत करो तथा आदर्श नागरिक बनो।

10. ईश्वर से प्रेम करो और पाप से घृणा करो ।

संगठन से कैसे जुड़ें

प्रत्येक मनुष्य जिसका भगवान में पूर्ण विश्वास श्रद्धा हो, आचरण के नौ नियमों का पालन करते हुए सेवा का इच्छुक हो अपने गाँव/इलाके की श्री सत्य साई भजन मण्डली अथवा श्री सत्य साई सेवा समिति का सदस्य बन सकता है । सदस्यता के लिए कोई शुल्क अथवा चंदा नहीं लिया जाता । सामान्य जन से भी किसी भी समय किसी भी रूप में अनुदान या चंदा नहीं लिया जाता है । समिति /संगठन अपने मासिक व्ययों की पूर्ति मात्र स्वैच्छिक रूप से प्राप्त योगदान से करते हैं ।

समिति /मण्डली का गठन :

किसी भी नये स्थान पर संगठन की इकाई खोलने के लिए कम से कम 10 सदस्य हों उनका मुखिया एक संयोजक रहता है जिसका प्रांत के अध्यक्ष तथा जिले के संयोजक से सम्पर्क बना रहता है । किसी भी धर्म से संबंधित कोई भी व्यक्ति जो संगठन से जुडना चाहता है तो उसे निकटस्थ समिति केन्द्र से सम्पर्क स्थापित कर विस्तृत जानकारियाँ प्राप्त करनी चाहिए ।

मौन और जप :

ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है । ईश्वर उन चित्रों व मूर्तियों में भी है, जिसकी हम पूजा करते हैं । ईश्वर हमारे अंदर भी स्थित है । हमें अपने अंदर उसकी उपस्थिति का अनुभव करने का प्रयत्न करना चाहिए । बाह्य दृश्यों

और ध्वनियों की ओर से अपनी आँखें व कान बंद कर लो, तब तुम्हारी अन्तः श्रवण शक्ति और अधिक स्पष्ट हो जावेगी ।

मौन बैठक के अभ्यास से एकाग्रता में वृद्धि होती है । निश्चित समय के लिए मौन बैठक करने से हमारी इन्द्रियाँ वश में हो जाती हैं । ईश्वर के नाम का जप और रूप का ध्यान करने से हमें मौन बैठक में सहायता प्राप्त होती हैं । जप निम्न प्रकार से किया जा सकता है: -

1. मन ही मन भगवान का नाम बार-बार दोहराना ।

2. भगवान का नाम दोहराते हुए उंगलियों पर गिनना

3. जपमाला की सहायता से नाम स्मरण करना ।

4. भगवान का नाम जैसे 'ॐ श्री साई राम बार बार लिखना । (इसे लिखित जप भी कहते हैं ।)

आस्था के प्रतीक संसार के प्रमुख धर्म

हिन्दु सनातन धर्म

सनातन अर्थात् वह जो अनादि, अनन्त, अपरिवर्तनीय है । सनातन धर्म का अर्थ है, वह धर्म जो शाश्वत मूल्यों व सिद्धांतों की अभिव्यक्ति है सिद्धांतों की अभिव्यक्ति है

1. परिचय

उत्पत्ति - इस धर्म की उत्पत्ति वेदों से हुई है वेद अपौरूषेय हैं अतएव यह धर्म भी मानव रचित नहीं है

धर्म चिन्ह - ओम्
धर्म ग्रंथ - वेद, प्रस्थानत्रयि (उपनिषद, ब्रह्म-सूत्र, भगवद गीता)
पूजा स्थल - मंदिर
तीर्थस्थल - बद्रीनाथ, द्वारका, जगन्नाथपुरी, रामेश्वरम, काशी आदि
परमात्मा का नाम - भगवान,ईश्वर, हरि, ब्रह्म ।

हिन्दु धर्म के प्रामाणित श्रोत 1. श्रुति 2. स्मृति

1. श्रुति
वेद - महर्षि वेदव्यास ने वेद को चार
1. ऋग्वेद (पैल को)

2. सामवेद (जैमिनी को)

3. यजुर्वेद (वैशम्पायन को)

4. अथर्ववेद (सुमन्त को)

शिष्यों को पढ़ाया ।

2. स्मृति

1. स्मृति या विधि विधान - उदाहरण - मनुस्मृति, नारदस्मृति

2. इतिहास - उदाहरण रामायण, महाभारत (पंचम वेद)

3. पुराण

4. आगम ग्रंथ 5. दर्शन (छः)

प्रमुख सिद्धांत-

1. सभी जीवधारियों में आत्मा का एकत्व

2. ईश्वर एक है (एकेश्वर वाद) परंतु उसे पाने के रास्ते अलग अलग हैं । उसके अनन्त रूप व अनन्त नाम हैं । (बहुदेव वाद)

3. अवतार की धारणा 4. कर्म की धारणा 5. पुनर्जन्म सिद्धांत

2. वर्णाश्रम व्यवस्था : -

चार वर्ण -ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

चार आश्रम -ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास

चार पुरूषार्थ - अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष

तीन कर्म - प्रारब्ध, संचित, क्रियमाण

पंच महायज्ञ - देवयज्ञ, ऋषियज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, अतिथियज्ञ

3. चार वैदिक महावाक्य :-

प्रज्ञानं ब्रह्म -परम ज्ञान ही ब्रह्म है । (आदेश वाक्य-ऋग्वेद)

तत्वमसि -तुम वही हो । (आदेश वाक्य-सामवेद)

अयम आत्मा ब्रह्म - मैं ही आत्म ब्रह्म हूँ।(जिज्ञासा परक वाक्य- अथर्ववेद)

अहम् ब्रह्मास्मि - मैं ब्रह्म हूँ । (अनुभूति वाक्य-यजुर्वेद)

4. नवधा भक्ति :-

1. श्रवणम् - राजा परीक्षित

2. कीर्तनम् - देवर्षि नारद

3. विष्णु स्मरणम्-प्रहलाद

4. पाद-सेवनम् - लक्ष्मण

5. अर्चनम् - भरत

6. वंदनम्-अक्रूर

7. दास्यम् - भक्त प्रवर हनुमान

8. साख्यम्-भक्त श्रेष्ठ अर्जुन

9. आत्म-निवेदनम्- श्रीराधा

5. साधन चतुष्टय :

1. विवेक 2. वैराग्य 3. मुमुक्षत्व - मुक्ति की कामना

4. षट्सम्पति - शम (मनोनिग्रह), दम (इंद्रिय निग्रह), उपरति (संतुष्टि), श्रद्धा, तितिक्षा (सहिष्णुता), समचित्तता (मन की दृढ़ता और समत्व बुद्धि), समाधान

6. दशावतार : -

1. मत्स्य 2. कूर्म 3. वराह 4. नरसिंह 5. वामन

6. परशुराम 7. श्रीराम 8. श्रीकृष्ण 9. बुद्ध 10. कल्कि

पारसी धर्म

1. परिचय :-

धर्म चिन्ह -पवित्र अग्नि

धर्म प्रवर्तक-जोहरास्त्र

तीर्थस्थल-

धर्म ग्रन्थ - जिंदावेस्ता

पूजास्थल- अगियारी

ईश्वर का नाम - आहुरमज्द

तीन सशक्त गूढ़ वचन-अच्छे विचार, अच्छी वाणी व अच्छे कार्य पाँच नैतिक मूल्य गुण - अच्छाई, सुसंगति, शान्ति, दान, पवित्रता

2. चार प्रमुख कर्तव्य :-

1. आहुरमज्द की पूजा करना ।
2. मार्गदर्शक के रूप में जोहराख्र - जरथुस्त को मान्यता देना ।
3. बुराई से लड़ना ।
4. आहुरमज्द के विधान में दृढ़ विश्वास ।

आचरण

नरस्य आचरणं रुपम् रुपस्य आचरणं गुणः गुणस्य आचरणं ज्ञानम् ज्ञानस्य आचरणं क्षमा ।।

3. जरथुस्त द्वारा मानव के पालनार्थ दी गई सात बातें

(आमेश स्पेन्ता)

1. आहुरमज्द की भक्ति करना ।
2. मनः बुद्धि विकसित करना ।
3. अच्छे विचार, अच्छी वाणी व अच्छे कर्म ही सर्वोत्तम धर्म है ।
4. दृढ़ इच्छा शक्ति सम्पन्न राजा के समान बनो ।
5. शाश्वत मधुरता दैवी आनन्द की प्राप्ति करो ।
6. पूर्णतः शान्ति व धैर्य अभीष्ट हो ।
7. मानव की आत्मा द्वारा अमरत्व प्राप्ति कर मुक्ति पाना ।

सुद्रेह एवं कुस्ती - सुद्रेह वह पवित्र वस्त्र है जो स्मरण कराता है कि, अंतिम निर्णय ईश्वर के द्वारा किया जाता है । कुस्ती धारण करना ईश्वर से सम्बन्ध रहने का प्रतीक है ।

कुस्ती में तीन धागे और चार गांठे होती है ।

तीन धागे जो प्रतीक हैं

1. आहुरमज्द जो विश्व का सृजन करता है ।
2. जो पालने वाला है ।
3. जो लय करने वाला है ।

चार गांठे यह बोध कराती हैं।

1. ईश्वर के नियमों का पालन करो ।

2. ईश्वर में सर्वोच्च विश्वास रखो।

3. इन नियमों के पालन करने में जीवन का बलिदान करो ।

4. बुराईयों से सतत् संघर्ष करते रहो ।

मनुष्य जन्म का उद्देश्य ही सेवा करना है अतः सदा परोपकार करो क्योंकि शरीर केवल खाने-पीनो और धन कमाने के लिए नहीं मिला है ।

श्री सत्य साई बाबा,

जैन धर्म

1. परिचय :

धर्म चिन्ह- स्वस्तिक,धर्म ग्रंथ -जिनवाणई

धर्म प्रवर्तक-वर्धमान महावीर

तीर्थस्थल-पावापुरी

परमात्मा का नाम-अर्हन्त, केवली

पूजास्थल-जिनालय

2. पाँच अनुशासन के नियम :-

1. अहिंसा-मन, वचन और कर्म से हिंसा न करना

2. सत्य-वाणी की सत्यता

3. अस्तेय-चोरी न करना

4. अपरिग्रह-लोभ न करना

5. ब्रह्मचर्य-आचार, विचार एवं वाणी की पवित्रता ।

3. जीव के गुण:

1.अनन्त वीर्य 2.अनन्त दर्शन

3.अनन्त ज्ञान 4. अनन्त सुख ।

4. परमेष्ठिन् (उच्च आत्मायें पाँच प्रकार की होती हैं :-

1. अर्हंत -शरीर में रहते हुए ज्ञान प्राप्त कर लिया है ।

2. सिद्ध-जिन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया है।

3. आचार्य-आश्रम पद्धति के प्रमुख

4. उपाध्याय-शिक्षक संत

5. साधु-सामान्य सन्यासी

ऊँणमो अरिहंताणं, ऊँणमो सिद्धाणं

ऊँणमो आयरियाणं, ऊँणमो उवज्झायाणं ऊँणमो लोएसब्बसाहूणं

बौद्ध धर्म

1. परिचय

धर्म ग्रंथ - धम्-प्रत्येक वस्तु सार रहित। बौद्ध-विहार

धर्म चिन्हग8.सम्यक ध्यात्र

धर्म प्रवर्तक- गौतम बुद्ध

तीर्थस्थल- बोधगया, सारनाथ

परमात्मा का नाम- बौद्ध (अभूत, अक्षर, ध्रुव और सत्य)

2. चार सिद्धांत -

सर्वम् दुःखम् -जीवन दुःखमय है।

सर्वम् क्षणिकम् -प्रत्येक वस्तु क्षण भंगुर है

सर्वम् अनात्मम् -प्रत्येक वस्तु सार रहित है

निर्वाणम् शान्तम् -निर्वाण में शान्ति है

3. चार सुप्रतिष्ठित सत्य

1. जीवन दुखमय है।
2. इच्छायें दुख का मूल कारण हैं।
3. इच्छाओं का दमन कर दुख का अंत किया जा सकता है।

4. आठ प्रकार के मार्ग हैं जिनके द्वारा दुख का अंत होना है ।

4. निर्वाण के लिए 8 प्रकार के मार्ग (अष्टांग मार्ग):

1. सम्यक दृष्टि 2. सम्यक संकल्प
3. सम्यक वाणी 4. सम्यक आचरण
5. सम्यक व्यवसाय 6. सम्यक प्रयास
7. सम्यक मनोवृत्ति 8.सम्यक ध्यान

5. पंचशील

अहिंसा, सत्यम्, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, मादक पदार्थों का त्याग ।

बुद्धम् शरणम् गच्छामि ।
धम्मम् शरणम् गच्छामि ।
संघम् शरणम् गच्छामि ।

सिक्ख धर्म

1. परिचय

धर्म चिन्ह -निशान साहब
धर्म ग्रन्थ -ग्रंथसाहेब
धर्म प्रवर्तक-गुरूनानक जी
तीर्थस्थल-अमृतसर (स्वर्ण मंदिर)
पूजास्थल- गुरूद्वारा
ईश्वर का नाम - सत् श्री अकाल

2. पंच ककार :

कंघी, केश, कडा, कटार, कच्छा ।

3. सिक्खों के दस गुरुदेव

1. गुरूनानक देवजी 2. गुरू अंगददेवजी 3. गुरू अमरदास जी

4. गुरू रामदास जी 5. गुरू अर्जुन देवजी 6. गुरू हरगोविन्द जी

7. गुरू हरराय जी 8. गुरू हरकिशन जी 9. गुरू तेगबहादुर सिंह जी 10. गुरू गोविन्द सिंह जी

यहूदी धर्म

1. परिचय : -

धर्म चिन्ह- षटकोण

धर्म ग्रंथ- ओल्ड टेस्टामेन्ट (तोराह)

धर्म प्रवर्तक- मोसेज (हजरत मूसा)

ईश्वर का नाम-यहोवा

पूजास्थल- सिनेगोग

उत्पत्ति- यहूदी धर्म ईसाई धर्म का प्रारम्भिक रूप है।

2. यहूदियों का तीन बातों में विश्वास है

1. पैगम्बर अथवा मसीहा का अवतार ।

2. ईश्वर आत्मा के प्रसार हेतु ईश्वर के प्रति प्रतिज्ञाबद्ध लोगों का होना ।

3. तोराह में निहित नियम ।

3. मुख्य आज्ञायें या धर्मादेश ।

1. पडोसी को अपने जैसा प्यार करो ।

2. तुम्हारे हृदय में तुम्हारे भाई के प्रति कोई घृणा नहीं होनी चाहिए ।

3. सदा न्यायोचित काम करना चाहिए ।

4. तुममें बुराई और दुर्भावना देखने वालों से भी बदला लेने की भावना नहीं होनी चाहिए ।

5. दयालु रहना चाहिए ।

6. ईश्वर के समक्ष सदैव दीन-हीन एवं विनम्र बनकर रहो ।

ईसाई धर्म

1. परिचय

धर्म चिन्ह-पवित्र सूली (क्रॉस)

धर्म प्रवर्तक- ईसा मसीह

धर्म ग्रंथ - बाइबिल

पूजास्थल - गिरिजाघर

ईश्वर का नाम -स्वर्ग में रहने वाला पिता (गॉड)

तीर्थ स्थल -जेरूसलम

2. दस दैवी आदेश :-

1. मैं तुम्हारा प्रभु ईश्वर हूँ, जो तुम्हें मिस्र के बाहर दासता के बंधन से लाया हूँ। मुक्त करके

2. तुम मेरे अलावा अन्य किसी भी ईश्वर की पूजा नहीं करोगे । कोई खुदी हुई मूर्ति नहीं बनाओगे जिसका साम्य किसी वस्तु से हो जो ऊपर स्वर्ग में है या नीचे पृथ्वी पर अथवा जमीन के नीचे पानी में ।

3. सहस्रों लोगों पर दया करो जो मुझे प्रेम करते हैं और मेरे आदेशों को मानते हैं ।

4. तुम अपने ईश्वर व प्रभु का नाम व्यर्थ में नहीं लोगे ।

5. जैसा कि, तुम्हारे प्रभु का आदेश है सैबथ (विश्राम) का दिन पवित्रता हेतु है । छः दिनों तक तुम मेहनत करोगे और सातवां दिन ईश्वर का दिन है । मनुष्यों व प्राणियों सभी के लिए विश्राम ।

6. अपने माता-पिता को ईश्वर मानकर आदर करो ताकि तुम दीर्घजीवी बनो ।

7. तुम हत्या नहीं करोगे ।

8. तुम चोरी नहीं करोगे।

9. तुम व्यभिचारी नहीं बनोगे ।

10. तुम अपने पड़ोसी की झूठी गवाही नहीं दोगे और न ही अपने पड़ोसी के धन दौलत की कामना करोगे ।

3. ईसा-मसीह का संदेश :-

1. सबसे प्रेम करो, अपने दुश्मन से भी ।

2. दूसरों को मत देखो, पहले अपने को सुधारो ।

3. उस पर आचरण करो जो मैने तुम्हें सिखाया ।

4. दूसरों के लिए उदाहरण बनो ।

5. ईश्वर पर भरोसा रखो, वह तुम्हारी चिन्ता करेगा

इस्लाम धर्म

1. परिचय :-

धर्म चिन्ह-चाँद तारा

धर्म प्रवर्तक -हज़रत मोहम्मद पैगम्बर साहब

ईश्वर का नाम-अल्लाह, खुदा

धर्म ग्रंथ-कुरान

पूजास्थल-मस्ज़िद

तीर्थस्थल- मक्का, मदीना

2. पाँच सिद्धांत :-

नमाज़- प्रार्थना

रोज़ा - उपवास

जेहाद - सिद्धांत की रक्षा के लिए खुद की कुर्बानी

खैरात--दान

हज-मक्का की तीर्थ यात्रा

3. पाँच प्रकार की नमाज़ :-

फज़र - सुबह

जौहर - दोपहर

असर - दोपहर और सूर्यास्त के बीच

मगरिब - सूर्यास्त के ठीक बाद

इशा-सोने के पूर्व

वो श्री सत्य साई बाबा ही हैं जिन्होंने संगठन की प्रत्येक गतिविधि के लिए दैवी शक्ति प्रदान की है वह सत्य तुममें से अनेकों ने आत्मसात किया है कि साई ही इसके लिए आंतरिक स्फूर्ति, प्रकाश एवं प्रेरणा प्रदान करते हैं।

श्री सत्य साई बाबा

पंचतत्व

प्रारम्भ में जब समय का भी अविर्भाव नहीं हुआ था तब केवल एक परम चेतना का ही अस्तित्व था, जिसे वेदों ने पुरूष कहकर पुकार है । पुरूष सत्, चित्, आनन्द है उसने संकल्प किया एकोऽहम् बहुस्याम् - मैं एक हूँ, अनेक हो जाऊँ वह पुरूष प्रेम की अभिव्यक्ति करना चाहता था और प्रेम प्रकट करने के लिए, प्रेम पात्र की आवश्यकता है; इसीलिए उसने सृष्टि की रचना की ।

यदि कोई मकान बनाना हो ते जमीन (स्थान), ईंट, सीमेन्ट, लकड़ी आदि की आवश्यकता होती है । उसी प्रकार सृष्टि की रचना करने के लिए आधारभूत तत्वों की आवश्यकता हुई अतः पंचतत्वों की उत्पत्ति हुई - आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इन तत्वों को उनकी पहचान देने हेतु उन्हें क्रमशः शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध - ये गुण प्रदान किए गए ।

बाबा ने कहा है -

"ब्रह्म तत्व से आकाश की उत्पत्ति हुई है । आकाश से वायु, वायु से अग्नि और अग्नि से जल तथा जल से पृथ्वी तत्व प्रकट हुआ । पृथ्वी से औषधि (वनस्पति) उत्पन्न हुई । औषधि से अन्न पैदा हुआ और अन्न से मनुष्य का जन्म हुआ । मनुष्य ईश्वर की सर्वोत्तम कृति है । मनुष्य देह भी प्रकृति का एक अंग है । वह भी पंच महाभूतों से निर्मित है मनुष्य पंचमहाभूतों का अस्वाद ले सके, प्रकृति से आनन्द ले, उसका उपभोग कर सके, इसीलिए मनुष्य को पंच ज्ञानेन्द्रियाँ दी गई हैं ।"

तत्व	गुण	इन्द्रियाँ
आकाश।	शब्द।	कान
वायु।	शब्द, स्पर्श।	त्वचा
अग्नि।	शब्द, स्पर्श, रूप।	आँख
जल।	शब्द, स्पर्श, रूप, रस।	जिव्हा
पृथ्वी	शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध	नाक

सृष्टि में मूल्य

प्रकृति में वस्तुओं के विभिन्न रुप, आकार और नाम हैं । तथापि सच्चाई यह है कि उनका स्रोत एक ही है । सृष्टि की इस सच्चाई में, प्रेम ऐसी ऊर्जा है जो सभी पाँच तत्वों को आपस में बाँध कर रखती है । प्रेम की यह दैवी ऊर्जा सम्पूर्ण सृष्टि में व्याप्त है । इसलिए सभी वस्तुएँ एक आचार-संहिता अर्थात धर्म का पूर्णतः पालन करती है ।

भगवान बाबा कहते हैं - प्रेम जब आचरण में आता है तो वही धर्म कहलाता है।

पर्वत एवं नदियाँ, पशु एवं पक्षी, सभी एक-दूसरे को सहारा देते हैं ताकि प्रकृति में पाँचों तत्वों का संतुलन बना रहे । उदाहरणार्थ - पेड़ को भूमि, वर्षा के जल, सूर्य की गर्मी और वायु से ही आहार मिलता है । बदले में पेड़, फल, चारा, ऑक्सीजन, छाल और जडो कें माध्यम से लाखों बेक्टीरिया और जीवाणुओं को, पशु-पक्षियों को जीवन प्रदान करता है। इस प्रकार से प्रकृति पूर्ण सामंजस्य और संतुलन प्रस्तुत करती है ।

इसी प्रकार जलीय चक्र भी सन्तुलन का अति सुन्दर उदाहरण है । ग्रीष्म ऋतु में, समुद्र का करोड़ों टन जल बादल के रुप में बदल जाता है । वायु इसे मीलों दूर ले जाती है और वह वहाँ प्यासी धरती पर बरस जाता है । यही जल पुनः नदियों के द्वारा सागर में मिल जाता है । नदियों के तट पर यह लाखों लोगों, पशुओं और पेड़ -पौधों को जीवन देता है । इस प्रकार, धर्म ही प्रकृति की सभी वस्तुओं के आचरण पर अंकुश लगाने वाला कानून है ।

प्रकृति शान्ति, सामन्जस्य एवं सुन्दरता को प्रदर्शित करती है । प्रकृति के सभी नियमों में पूर्ण अहिंसा है । पाँचों तत्वो में संतुलन इसलिए है कि सृष्टि में अन्तर्निहित मूल्य दिखाई देते है । एजुकेयर का कोई आदर्श पात्र देखना हो तो वह है प्रकृति ।

मनुष्य ने अपनी इन्द्रियों के वशीभूत हो अपने स्वार्थ के लिए पंचतत्वों का असीमित उपयोग प्रारंभ कर दिया अपनी असीम इच्छाओं और स्वार्थी स्वभाव के कारण उसने प्रकृति का अविवेकपूर्ण दोहन प्रारंभ कर दिया । इसलिए प्रकृति में स्थित पंचतत्वों का संतुलन बिगड़ गया है। जिसके कारण भूकम्प, बाढ़, अनावृष्टि, अतिवृष्टि आदि प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है मानव जीवन पंचतत्वों पर आश्रित है इसलिए
प्रकृति में पुनः संतुलन स्थापित करने के लिए मनुष्य को अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण कर जल, वायु, ऊर्जा, समय व भोजन का अपव्यय रोकना होगा।

ये पंचतत्व अपने आप में सदैव संतुलन बनाए रखते हैं क्योंकि सृष्टि के प्रारंभ से ही उनमें मानवीय मूल्य निहित हैं सृष्टि अनादिकाल से ही पाँचो आधारभूत मूल्यों के माध्यम से अनेकता में एकता की अभिव्यक्ति करती रही है । सत्य से प्रकट हुई इस सृष्टि में पाँचों तत्व अनुशासन अर्थात् धर्म का पालन करते है इसलिए प्रकृति में सदैव शान्ति रहती है । जब प्रकृति अन्तर्निहित अनुशासन के माध्यम से शान्ति का प्रदर्शन करती है तब अहिंसा अस्तित्व में आती है । इस प्रकार यह प्रकृति हमें पाँचो आधारभूत मानवीय मूल्यों की शिक्षा देती है । इन मानवीय मूल्यों को आत्मसात करने के लिए हमें पाँचों डी - कर्तव्य, अनुशासन, भक्ति (समर्पण), विवेक और दृढ़ संकल्प (Duty, Discipline, Devotion, Discrimination, Determination) का आचरण करना चाहिए

मनुष्य ने अपने स्वार्थपूर्ण क्रिया-कलापों से तत्वों को प्रदूषित कर दिया है: प्रदूषित जल, वायु, पृथ्वी आदि जीवन का पोषण करने की बजाए उसे नष्ट कर देते हैं । इसलिए इस प्रदूषण को नष्ट करना है । पंचतत्व मनुष्य के भीतर भी हैं और बाहर भी हैं। हम निरन्तर बाहर प्रकृति में स्थित तत्वों से भीतरी तत्वों का आदान-प्रदान करते रहते है । बाह्य प्रदूषण हमारे भीतर के तत्वों को प्रदूषित कर देता है और हमारे प्रदूषित विचार एवं कार्य बाह्य तत्वों को प्रदूषित करते रहते हैं। इसलिए प्रदूषण हटानेका सर्वोत्तम उपाय है ज्ञानेन्द्रियों द्वारा अच्छा ग्रहण करो और कर्मेन्द्रियों एवं मन से अच्छा फैलाओ । अतः अच्छा देखो, अच्छा सुनो, अच्छा बोलो, अच्छा करो, अच्छा सोचो और अच्छे विचारों को आश्रय दो ।

बाबा ने कहा है कि 'यदि हम पाँचो मानवीय मूल्यों को आत्मसात कर लेंगे तो स्वयमेव पंचतत्वों का शुद्धिकरण हो जाएगा और पुनः उनमें सन्तुलन स्थापित हो जाएगा।

तत्वों के शुद्धिकरण और उनमें संतुलन स्थापित करने के उपाय: 1. इच्छाओं पर नियंत्रण कर पंचतत्वों का अपव्यय रोकें ।

2. पाँच डी. का पालन कर पंचतत्वों में संतुलन स्थापित करें।

3. इन्द्रियों पर नियंत्रण कर उनसे अच्छा ही ग्रहण करें और अच्छा ही प्रसारित करें ।

4. सभी ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को पावन बनाए रखें ।

अहंकार के दुर्गुण को दूर करने के लिए सेवा सर्वाधिक उपयुक्त उपकरण है सेवा करने वाले व्यक्ति को सम्पूर्ण मानव जाति के एकत्व का बोध होता है । जो व्यक्ति अपना समय अपनी दक्षता व शक्ति को सेवा के प्रति समर्पित करता है उसे पराजय, विपत्ति अथवा निराशा का सामना नहीं करना पड़ता है, क्योंकि सेवा स्वयं में अपना पुरस्कार है । उस व्यक्ति के शब्द सदा मधुर व कोमल होंगे, उसके हाव-भाव सदा आदर युक्त व नम्र होंगे । उसका कोई शत्रु नहीं होगा, उसे कोई थकान नहीं होगी और उसे कोई भय नहीं होगा।

श्री सत्य साई बाबा

पाँच डी -एज्यूकेयर के लिए साधना के रूप में

1. भक्ति-डिवोशन (DEVOTION)

ईश्वर के प्रति प्रेम, भक्ति है - यही दैव प्रीति है । ईश्वर में विलीन होने की इच्छा भक्ति है जिसका अर्थ पूर्ण शरणगति । सभी तरह के सांसारिक प्रेम भक्ति नहीं है। क्योंकि वे सब अस्थाई और स्वार्थपुर्ण है। केवल ईश्वर का प्रेम ही स्वाभाविक और शाश्वत है। ईश्वर ने हमारे उपयोग के लिए बहुत सी वस्तुओं

का निर्माण किया है इसलिए भक्ति के रूप में यह ईश्वर के प्रति आभार प्रदर्शन है। भक्ति मन का संतुलन है। भक्ति के नौ पथ है जिसे नवधा

भक्ति कहते हैं। रास्ते कई हैं पर ध्येय एक ही है ।

1. श्रवणम्- प्रभु लीला सुनना
2. कीर्तनम्-गाकर भजन करना
3. नामस्मरणम् -नाम का स्मरण, जप
4. पादसेवनम् -प्रभु चरणों की पूजा सेवा- उनकी सीखों पर चलना, आचरण
5. दास्यम्- सेवक की तरह भक्ति करना।
6. वन्दनम् -भगवान की वंदना करना
7. अर्चनम्-भगवान की पूजा करना
8. साख्यम्- मित्र भाव से भगवान से प्रेमकरना
9. आत्मनिवेदनम् -अपना अच्छा बुरा सब कुछ दीन के समान भगवान से निवेदन करना।

भक्ति के मार्ग पर चलने के लिए 9 साधनायें करनी होती हैं । बाल-विकास कक्षा में जप, ध्यान, प्रार्थना, ,भजन, , सेवा आदि सभी पद्धतियाँ बच्चों को ईश्वर की तरफ अर्थात् भक्ति की ओर ले जाती हैं । भक्ति समुद्र की तरह अथाह गहरी है। भक्ति से ही दिव्यत्व के अमृत का रसपान किया जा सकता है । भक्ति ही सभी साधनाओं का सार है ।

2. कर्तव्य - सेवा (ड्यूटी) DUTY

शरीरमाद्यं खलुधर्म साधनम्

मनुष्य शरीर जो पांच तत्वों का बना होता है, धर्म के आचरण के लिए है । मनुष्य के कर्म ही बीज हैं जो उसके फल की फसल उगायेंगे । इसलिए अच्छी फसल लेने के लिए अच्छे बीज का डालना जरूरी है। हम स्वयं ही अपने भाग्य निर्माता है अपने भाग्य और दुर्भाग्य के लिए जिम्मेदार हैं

कर्तव्य का अर्थ है सौंपे गये कार्य को अच्छी तरह, सम्पूर्णता से, पूर्ण कौशल से करना । कर्तव्य का आरम्भ घर से होता है, क्योंकि घर ही समाज की इकाई है । फिर यह दायरा विस्तृत होता जाता है। घर में माता-पिता के प्रति कर्तव्य के लिए विवेकानन्द, सुभाषचंद्र बोस, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी अनेक उदाहरण हैं ।

जब कर्तव्य निस्वार्थ भाव से, किया जाता है तो वही कर्तव्य सेवा बन जाता है सेवा करते समय सब में ईश्वर है यह भाव रहे। उदाहरण एकनाथ महाराज द्वारा प्यासे गधे को गंगाजल पिलाना । बाबा कहते हैं- 'प्रेम के बिना कर्तव्य शोचनीय है, प्रेम के साथ कर्तव्य वांछित है, सहज कर्तव्य दिव्य है' ।

जरूरतमंद की समय पर, निस्वार्थ भाव से प्रेम के साथ मदद करना ही सेवा है जैसे - मदर टेरेसा, बाबा आमटे। इस तरह कर्तव्य और सेवा से अहंकार का नाश होता है। विनम्रता से हृदय शुद्ध होता है, ईश्वर के प्रति भक्ति भाव बढ़ता है। आध्यात्मिक मार्ग में प्रगति होती है।

मानव सेवा ही माधव सेवा है।

3. अनुशासन (डिसिप्लिन) DISCIPLINE

अनुशासन का अर्थ है आज्ञा या आदेशों को मानते हुए स्वयं को नियंत्रित करना, नीति नियमों का पालन करना। ईश्वर द्वारा निर्मित सम्पूर्ण सृष्टि की सभी चीजें अनुशासन का पालन करती हैं, जैसे सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, सागर. जल। यहाँ तक कि पशु-पक्षी भी एक अनुशासन में रहकर प्रकृति का संतुलन बनाए रखते हैं। इस युग में सिर्फ मानव ही अपना अनुशासन भूलता जा रहा है। जिससे उसका जीवन असंतुलित होता जा रहा है। मानव जीवन के निम्न दो पहलुओं में अनुशासन की आवश्यकता है :

1. भौतिक जगत से संबंधित अनुशासन।

2. आध्यात्मिक जगत से संबंधित अनुशासन।

भौतिक जगत से संबंधित अनुशासन

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास और अच्छी आदतों के प्रस्थापन के लिए बच्चों में तीन प्रकार के कौशल को विकसित करना होगा।

अ. व्यक्तिगत कौशल -

1. व्यक्तिगत स्वच्छता एवं आरोग्य का ध्यान रखना।
2. आत्म निर्भरता।
3. खान-पान संबंधी आदतें।
4. अपना काम खुद करना।

ब. सामाजिक कौशल -

1. दूसरों को भी सुनना, सबसे अच्छा व धीमे बोलना।
2. बांट कर खाना, साथियों का सुख दुःख में ध्यान रखना।
3. अनुशासित होकर लाइन में हर काम करने की आदत डालना।
4. किसी की निंदा नहीं करना।

5. बड़ों का आदर करना ।

स. नैतिक कौशल -

1. समय का सम्मान करना, समय की पाबंदी ।
2. गाली, अपशब्द, निंदा, झूठ, व्यर्थ की बातों से बचना ।
3. चोरी नहीं करना ।
4. सच बोलना ।

मानव के मन के असंतुलन का मुख्य कारण उसकी बढ़ती इच्छाएँ हैं । इसलिए इच्छाओं पर नियंत्रण के लिए इन्द्रिय निग्रह की आवश्यकता है।

आध्यात्मिक जगत से संबंधित अनुशासन :

जप, ध्यान, प्रार्थना, अच्छे साहित्य का पठन तथा सेवा भाव का विकास आदि करना आवश्यक है। प्रातः से रात्रि तक भगवान की याद करना व निर्धारित प्रार्थना करना यथा प्रातः उठने, भोजन की, सायं दीपक जलने व सोते समय की प्रार्थना करना इन अनुशासनों के पालन करते रहने से ही बच्चों में अच्छी आदतों का प्रतिस्थापन होगा तथा हमें आगे चलकर एक संतुलित समाज प्राप्त होगा ।

4. विवेक - इच्छाओं पर नियंत्रण

(डिस्क्रिमिनेशन) DISCRIMINATION

सही और गलत की पहचान अर्थात् विवेक और वैराग्य दोनों ही शान्ति के लिए आवश्यक हैं। सभी शान्ति तो प्राप्त करना चाहते हैं पर सही-गलत की पहचान नहीं कर पाते अर्थात् का अभाव ।

मन इच्छाओं का बंडल है इच्छाएँ कभी न पूरी होने वाली भूख है। इसलिए आध्यात्मिक पथ के यात्री के लिए इच्छाएँ सबसे बड़ी बाधक है। उदाहरण के रूप में वायु यदि पर्याप्त मात्र में उपलब्ध तब उपयोगी रहती है पर यदि वायु की मात्रा और गति में बढ़ जाए तो यह तूफान का रूप ले लेती है।

हमारा जीवन सीमाओं में आबद्ध है अर्थात् हमारा जीवन लिमिटेड कम्पनी है । काम अर्थात इच्छाओं की अधिकता से पाँच षड रिपु भी हमारे पास आ जाते हैं । इच्छाएँ पूरी नहीं होती तो उसके दो बच्चों के रूप में क्रोध और द्वेष का जन्म होता है । इच्छाएँ पूरी हो गई तो मोह का जन्म होता है । मोह शक्तिशाली हो गया तो लालच, लोभ आ जाता है और फिर अन्त में शक्तिशाली अहंकार, मद, व मत्सर आ जाते हैं। इसलिए इच्छाओं पर नियंत्रण ही विवेक है।

बाबा ने इच्छाओं पर नियंत्रण के प्रमुख चार प्रकार बताए हैं :

1. अन्न पर अपव्यय नहीं करना । (थाली में खाना नहीं छोड़ना), अन्न का सम्मान ।
2. धन का अपव्यय नहीं करना । (फिजूलखर्ची से बचो), लक्ष्मी माँ का सम्मान ।
3. ऊर्जा का अपव्यय नहीं करना । शक्ति शारीरिक की हो, बिजली, पानी जो भी हो उचित खर्च, शक्ति का सम्मान है ।
4. समय का अपव्यय नहीं करना । समय ही ईश्वर है- समय का सम्मान भगवान की पूजा है ।

5. संकल्प डिटरमिनेशन DETERMINATION

पाँच डी में से अंतिम डी संकल्प है। यह विवेक के बाद का चरण है। सही-गलत की पहचान के बाद ही संकल्प का महत्व है अन्यथा इसका कोई अर्थ नहीं । विवेक के बाद ही संकल्प की दिशा सही और सकारात्मक होगी । संकल्प पूर्ण एकाग्रता के साथ अपने उद्देश्य की प्राप्ति है। इसके लिए सभी कठिनाइयों,असफलताओं का सामना करना होगा । शारीरिक और नैतिक शक्ति की आवश्यकता होगी।

संकल्प हमारे अन्दर की प्रेरणा शक्ति Motive Force है । यह कहीं बाहर से नहीं आता। संकल्प के उदाहरण के रूप में ध्रुव; बुद्ध; गाँधी; विवेकानन्द; डाकू रत्नाकर (वाल्मीकि), रामकृष्ण । सबसे बड़े संकल्प के उदाहरण स्वयं भगवान बाबा है ।

इन्द्रियाँ हमारे लिए हैं, इसलिए इसका उपयोग सही और ठीक अनुपात में हो । भगवान ने वाणी दी है सच व मधुर बोलने के लिए । नेत्र दिए हैं, संसार में व्याप्त अच्छाई के रूप में दिव्यता देखने के लिए, नासिका दी है सोहम् का ध्यान करने लिए। भगवान बाबा बुद्ध की सम्यक् दृष्टि, सम्यक् श्रवण, सम्यक् वाक् की चर्चा अपने दिव्य प्रवचनों में करते हैं ।

बाल विकास कार्यक्रम में बच्चों में संकल्प इन्द्रिय निग्रह के लिए जप, ध्यान, मौन बैठक, गायत्री जप, कहानी, प्रार्थना आदि पद्धतियाँ सहायक होंगी ।

"साईश षटकम्"

प्रदोष काल दर्शनम्, विशालकेश भूषणम् सुशांतकांत पालकम्, नमामि साई शंकरम् अनेक नामधारिणम्, सनातनात्म दर्शकम् विनोदविश्व पोषकम्, मनोभिलाषपूरकम् ।।१।।

अनन्तप्रेम सागरम्, अनन्त शांतिदायकम् निरन्तरम् भजाम्यहम्, कृपाकरम् प्रभाकरम् अखंड विश्वनायकम्, प्रचण्ड कार्यसाधकम् अचिन्त्य ज्योति रूपिणम्, दयादि भावप्रेरकम् ॥ २ ॥

सुधैर्यहस्त सूचकम्, प्रभावभाव स्थावरम् त्वमेवसर्व पाकलम्, ममात्म शक्ति कारणम् सकलभक्तपाकलम्, सदानुकूल कारकम् विशालभाव मूर्त्तितम्, सुशील साई चिन्मयम् ।।३।।

प्रवीण वीण वैणिकम्, प्रसादसर्वरक्षकम् सुधर्म मूर्ति राघवम्, सुपावनात्म मानुषम् सुरेश्वरम् मुनीश्वरम्, महेश्वरम् साईश्वरम् विभूतिधार सुन्दरम्, यजामितम् परात्परम् ।।४।।

त्रिलोक पूज्य नायकम्, विनीत भक्त पालक सुनीति प्रीतिदायकम्, विभूति दान शंकरम् प्रशांतिवासी मोहकम्, सुशांति मार्ग दर्शकम् प्रकान्ति शोभितम् मुखम्, सदा करोमि चिन्तनम् ।।५।।

महागुणज्ञ राघवम्, प्रसन्नरूपि माधवम् परन्तु अद्य साईनम्, एक देवरूपिणम् नमामि पतनायकम्, स्मरामि शीर्डीपालकम् सदाविधात भाग्यताम्, त्वमेव साई सुंदरम् त्वमेव साई सुन्दरम्, त्वमेव साई सुंदरम् ।।६।।

आवश्यक पाठ्य एवं संदर्भ पुस्तकें

प्रथम समूह

1.श्री सत्य साई बाल विकास गुरु- मार्गदर्शिका -प्रथम समूह प्रथम वर्ष
2.श्री सत्य साई बाल विकास गुरु- मार्गदर्शिका खंड 1 द्वितीय व तृतीय वर्ष
3. बाल विकास प्रवेशिका Primer 1 प्रथम वर्ष

4. बाल विकास प्रवेशिका Primer 1 द्वितीय वर्ष

5. बाल विकास प्रवेशिका Primer 1 तृतीय वर्ष

6. बाल साई की दिव्य लीलाएं - श्री सत्य साई बाल विकास प्रथम समूह

7. चित्रकथा भाग 1

8. बाल कहानियाँ - भाग 1

9. Divine Album

10. मेरा जीवन मेरा संदेश

11. श्री सत्य साई एड्यूकेयर (सनातन शिक्षा) पाठ योजनाएँ

12. बाल विकास पत्रिका

13. सनातन सारथी

द्वितीय समूह

1. श्री सत्य साई बाल विकास गुरु मार्गदर्शिका द्वितीय समूह- प्रथम वर्ष

2. बाल साई की दिव्य लीलाएँ श्री सत्य साई बाल विकास द्वितीय समूह

3. चिन्नकथा भाग 2

4. बाल कहानी भाग 2

5. गीता वाहिनी

6. श्री सत्य साई बाल विकास मार्गदर्शिका - भगवत गीता के श्लोक

7. बाल विकास पत्रिका

8. सनातन सारथी

तृतीय समूह

1. दिव्य पथ - भाग 1

2. दिव्य पथ - भाग 2

3. गीता वाहिनी

4. अमृत वर्षा 1973

5. श्री सत्य साई बाल विकास गुरु मार्गदर्शिका - भगवत गीता के श्लोक

6. बाल विकास पत्रिका

7. सनातन सारथी